Chap-7

सप्तम अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में विविध शैलीय रूप

व्यंग्य निबंधों में विविध शैलीय प्रयोग

(1) वर्णनात्मक शैली (2) संवाद शैली (3) प्रतीकात्मक शैली
(4) मिथकीय शैली (5) फन्तासी शैली (6) प्रश्नोत्तर शैली
(7) पत्र शैली (8) भाषण शैली (9) आलोचनात्मक शैली
(10) इन्टरव्यू शैली (11) तुलनात्मक शैली (12) विरोधाभासपरक शैली
(13) कथा शैली

अन्य शैली प्रयोग

सप्तम अध्याय

साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में विविध शैलीय रूप

हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य में विसंगतियों को यर्थाथ रूप से संप्रेषित करने के लिए व्यंग्यकारों ने अनेक प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। व्यंग्य निबंधों में शैली प्रयोग के लिए कोई सीमा नहीं है। यही कारण है कि हिन्दी व्यंग्य निबंधों में जितनी शैलीय विविधता मिलती हैं, उतनी अन्य साहित्यिक विधाओं में दृष्टिगत नहीं होती। व्यंग्यकारों ने विसंगतियों का यर्थात निरूपण अपने विविध भावों एवं विचारों का कल्पना के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए यथानुरूप शैलीगत प्रयोग का विनियोग किया है। यहाँ इसी उद्देश्य से व्यंग्य निबंधों में विविध शैलीय रूपों के प्रयोग पर दृष्टिपात किया जा रहा है।

व्यंग्य निबंधों में विविध शैलीय प्रयोग

1) वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली में व्यंग्यकार किसी भी विषय, वस्तु, घटना या विविध प्रसंगो का वर्णन करता है।इसमें रोचकता बिम्बात्मक भाषा तथा व्यंग्यकार के सूक्ष्म निरीक्षण की शक्ति को देखा जा सकता है। व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त वर्णनात्मक शैली के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

"अल्सेशियन बड़ा-सा होता है। वह घोड़ा-सा तो नहीं होता, पर गाय की ऊँचाई तक जा सकता है, बाज अल्सेशियन उस ऊँचाई तक गये हैं। जब कोई तनाव नहीं होता, ये अपना मुँह खोले रहते हैं और पैने दाँतों के बीच से लम्बी-सी जुबान बाहर निकाले रहते हैं।"[1]

"चूहा जैसा कि शायद सभी जानते हैं, एक छोटा-सा जानवर होता है जो कि पैरों के सहारे चलता है। इस जानवर का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है, जैसे स्त्री चूहा या पुरूष चूहा, जंगली चूहा या घरेलू चूहा, छोटा चूहा या बड़ा चूहा। और जानवरों की तरह चूहा भी अपने बचपन में छोटा होता है और धीरे-धीरे अपने पूरे कद में प्राप्त होता है।"[2]

"अस्पताल प्राय: काफी गन्दे होते हैं। सबसे ज्यादा गन्दी जगह को आपरेशन-

थियेटर कहते हैं इतनी गन्दकी इकठ्ठी करने के सन्दर्भ में अस्पताल के विभिन्न कर्मचारियों को काफी परिश्रम करना पड़ता है क्योंकि वैसे वहाँ सफाईवालों की या जमादारों की कमी नहीं होती।"[3]

यहाँ सरकारी अस्पताल का वर्णन किया गया है। जिसके द्वारा अस्पताल में देखी जाने वाली गन्दकी को अभिव्यंजित किया गया है।

"अस्पताल वह स्थल है, जहाँ भारतीय मरीजों को जीवन और मृत्यु से संघर्ष करने का सुनहरा अवसर प्राप्त होता है। इससे भले ही कोई लाभ हो या न हो, लेकिन आदमी की संघर्ष शक्ति बढ़ती है।"[4]

"आपका नाम श्मिट है। आप भी जर्मनी के रहनेवाले हैं। आप डोबरमान कुल के हैं। जैसे लम्बा तड़ंगा, साँचे में ढला हुआ कसीला बदन है, वैसा ही बहादुर भी है। पहरेदारी के लिए आपसे अच्छा कोई संतरी नहीं"[5]

यहाँ कुत्ते का व्यंग्यात्मक वर्णन बहुत ही रोचक रूप से किया गया है।

"मंच साहित्य का भी होता है जो यदि अखाड़े में परिणत नहीं होता तो इतिहास नहीं बन जाता।

मंच पर जमीन के विपरीत समीक्षक बड़ा दिखता है तो कवि छोटा।

मंच की महीमा इतनी बड़ी है कि दस किताबें जो नाम नहीं देती वह एक मंच दे देता है।"[6]

"डंडा चन्दन का था, उसकी मूँठ चाँदी की थी। जिस पर सुन्दर नक्काशी का कार्य किया हुआ था। उसकी लम्बाई 18 इंच तथा वजन 335 ग्राम था। श्रीयुत! ज्वाला प्रसादजी जब से पोंगाराज्य के मुख्यमंत्री बनाए गए तब से उनकी महत्वकांक्षाएँ कुकुरमुत्तें की तरह बढ़ने लगी।"[7]

"कबीर एक हिन्दू पुत्र था जिसे मुस्लिम जुलाहे ने पाला था। कबीर हिन्दु-मुसलमानों को खरी-खरी सुनाकर एक करना चाहता था। वह भारतीय मिट्टी का फक्कड़ कवि था। इस भक्त कवि की लाश के फूल बन गये थे जिन्हें हिन्दु-मुसलमानों ने बाँट लिया था।"[8]

"दिल्ली की सड़कों पर आपको लाल बत्तियों का ढेर मिलेगा। कभी रामकृष्णपुरम् से मूलचंद की ओर रिंग रोड़ पर चले जाइए 6 किलोमिटर के इस क्षेत्र में आपको दस लाल बत्तियों के दर्शन होंगे। आप चाहें तो इसे लाल-बत्ती क्षेत्र कह सकते हैं, वैसे भी यह दक्षिण दिल्ली का इलाका है। लाल बत्ती क्षेत्र से

इसका गहरा ताल्लुक है।

आपको दिल्ली में 'दरियागंज' मिलेगा, 'पहाड़गंज' मिलेगा परन्तु इन इलाकों में न तो कोई दरिया या पहाड़ है और नहीं ये इलाके गंजों की फसल के लिए प्रसिद्ध है।"[9]

यहाँ दिल्ली का वर्णन हास्य मिश्रित व्यंग्यात्मक रूप में किया गया है।

"पहले धार्मिक गुरू हुआ करते थे, उनको आप नेता 'केटेगरी' में ले सकते हैं। पर नेता का जो 'लेटेस्ट मोडल' है, वह तो रहस्यमय है, जैसे नेता या नेती शक्ल-सूरत से साधारण आदमी / औरत से होते हैं पर होते हैं विचित्र। नेताओं का मस्तिष्क ब्रह्मा ने तो बनाया नहीं, किसने बनाया। ये आज तक पता नहीं चल सका। इनके काम, इनकी बातें, इनके भाषण गिरगिटिया आचरण, सब मिलाकर अद्भुत रस की निष्पत्ति करते हैं।"[10]

यहाँ नेता का व्यंग्यात्मक चित्रण वर्णनात्मक शैली द्वारा दिया गया है।

"'माइक' मौन धारण नहीं करते, कभी कभी अपने मधुर स्वर का आस्वादन भी कराते है। कभी भैरवी राग तो कभी आसावरी और मस्ती में आ जाए तो ऐसे स्वर निकालते हैं मानो उनका कंठ अवरूद्ध है और उन्हे किसी अच्छे अस्पताल में दाखिल कराना आवश्यक है, कार्यक्रम स्थगित भी करना पड़े तो कोई हानी नहीं।"[11]

"कुत्तों वाले पड़ोसियों के घर जाते समय आपको सिर्फ एक बात का ध्यान रखना चाहिए, वह यह कि ऐसों के घर जाते समय या तो किसी दोस्त को साथ लीजिए या दुश्मन को। दोस्त इसलिए कि मान लीजिए, कुत्ता आपको काट ही खाये तो दोस्त चिकित्सा आदि का प्रबन्ध कर सके, और दुश्मन इसलिए कि कौन जाने कुत्ता उसी को काट खाये।"[12]

"भाषण देने से फेफड़ों पर जोर पड़ता है और रक्त-संचार की गति तेज होती है। इसलिए भाषण देने वालों को फेफड़े की बीमारी नहीं होती। लगातार भाषण देते रहने से सेहत अच्छी होती है और और बुद्धि मंद। इससे शारीरिक वृद्धि होती है। इसलिए अधिकांश भाषण देनेवाले मोटे-ताजे और तन्दुरस्त होते हैं। दुबला-पतला मरियल वक्ता अपवाद या नवसिखुआ समझा जाता है।"[13]

यहाँ भाषण देने की प्रवृत्ति रखने वाले लोगों की तंदुरस्ती को वर्णनात्मक शैली में व्यंजित किया गया है।

"और क्रुद्ध प्राचार्य वह है जो बात-बात पर कटखने कुत्ते की तरह भौंकता है

और कैफियत, कार्रवाई, कटौती आदि की धमकी देता है। इसमें जो कम क्रुद्ध होता है, वह इतना ही करके रह जाता है और जो ज्यादा क्रुद्ध होता है वह धमकी को चरितार्थ कर दिखाता है।"[14]

"भारतीय समाज में सास की एक खास स्थिति है। खास तौर से लड़कियों की सास की। लड़कियों यानी बहुओं की सासों का रोबदाब, आतंक देखने लायक चीज़ है, जिस समय बहुएँ झुककर, घूँघट काढ़कर अपनी सासों के पैरों को हाथ लगाती है और बूढ़ी सासें 'बूढ़ सुहाग हो', 'दूधो नहाओ पूतो फलो' का आशीर्वाद तृप्ति-भाव से बाँटती हैं, तो समूचे परिवार में सौंदर्य, स्नेह और उत्फुल्लता की मन्दाकिनी प्रवाहित होने लगती है।"[15]

यहाँ सास-बहु के रिश्तों का व्यंग्यात्मक वर्णन किया गया है।

"गुरूघंटालों की दूसरी विशेषता अथवा गुण यह है कि वे गुरूओं के चरण के सर्वथा विपरीत आचरण करते हैं अर्थात् गुरूघंटाल स्वयं भूखा रहने के बजाय दूसरों को भूखा मारते है। दूसरों को न खिलाकर स्वयं दूसरों से खाते हैं। ठीक अवसर पर पहुँचकर चाय के प्याले पर अधिकार कर लेते हैं। अपने घर पर कभी भी किसी को भूलकर भी भोजन का अथवा 'टी पार्टी' का निमंत्रण नहीं देते हैं।"[16]

यहाँ गुरूघंटालों की चारित्रिक विशेषताओं को वर्णनात्मक शैली द्वारा अभिव्यंजित किया गया है।

"फाइलों की चाल भी अपनी ही हैं। कोई तो तुफान मेल की गति से चलती है, कोई पैसिंजर की गति से। कोई चलती ही नहीं। कारण आपको स्वयं पता है। किसी फाइल को चलाना पड़ता है, बार-बार कहकर, कोई स्वयं ही चलती जाती है, अर्जुन के तीर की गति से।"[17]

फाइलों की गति के वर्णन द्वारा दफ्तरों की कार्यप्रणाली पर व्यंग्य किया गया है।

वर्णनात्मक शैली के कुछ अन्य उदाहरण

'काले धन का शास्त्रीय विवेचन'. 'शाम हो गयी'[18] 'एक पुराने जमाने की नायिका', 'विविध प्रसंग', 'जूते'[19] 'ए-वन जूता', 'यह दिल्ली है'[20], 'पुस्तक', 'लड़की का चुनाव'[21], 'कला चुना लगाने की'[22], 'माइक-महात्म्य', 'द' से दलाल'[23], 'मेरा टॉमी बनाम फिल्मस्टार'[24], 'सेवा-समारोह'[25], 'अनेकता में एकता की छटा', 'ससुराल

का कमाल', 'घर-घाट का घाट', 'मिष्टान्न-विक्रेता का विद्या व्यसन'[26], 'तीन घंटे का आपातकाल', 'लाड़ला स्कूटर चिरायू हो!'[27], 'राष्ट्र के समय प्रहरी'[28], 'गुरूघंटाल बनो!', 'निराली पूंजा', 'महिला महिला को क्यों घूरती है!"[29] 'प्रेम करे दुख होय', 'बच्चा मैट्रिक में है'[30] 'फाइलों का संसार', 'नमस्ते'[31] जैसे व्यंग्य निबंधों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

2) संवाद शैली

जहाँ दो या दो से अधिक पात्रों के बीच वार्तालाप के माध्यम से पात्र की मन: स्थिति तथा परिवेश का परिचय मिलता है, वहाँ संवाद शैली का प्रयोग होता है। इसे वार्तालाप शैली भी कहा जा सकता है। व्यंग्य निबंधों में कहीं-कहीं संवादों के माध्यम से विषय वस्तु तथा पात्रों के चरित्र-चित्रण द्वारा यथार्थ को व्यंजित किया गया हैं। संवाद शैली के कुछ उदाहरण-

"अध्यक्ष ने कहा - आप सवाल पूछिए।"

'इस निबंध से हम लोगों को गहरा धक्का लगा है।'

उन्होंने कहा, 'इस निबंध का यही उद्देश्य था।'

अध्यक्ष ने टोका, 'सवाल! सिर्फ सवाल पूछिए' समीक्षा नहीं चाहिए!

'क्यों नहीं होनी चाहिए?'

'सवाल! सवाल पूछिए। समीक्षा नहीं।'

'मैंने सवाल पूछा, समीक्षा क्यों नहीं होनी चाहिए?'

'वह इसलिए मेरे दोस्त, कि सवाल अभी मेरी मौजूदगी ही में हो सकता है। जैसा कि लोग पिछले बीस साल से करते रहते हैं।"[32]

"डॉक्टर - "माफ कीजिएगा। आपकी कोई खास खिदमत नहीं कर सका।"

मैं - "वह डॉक्टर, आपकी बदौलत तीन दिन का विश्राम मिला। लोग कहते है कि आराम हराम है, लेकिन मैंने अब समझा कि आराम मुफ़्त बदनाम है। उसे हासिल करना ही आदमी का फर्ज है। आखिर अस्पताल को भी कायम रखना है।"

डॉक्टर मुस्कुराने की कोशिश में बोलना भूल गए। अतएव मैंने ही झटके के साथ उठते हुए कहा- "अच्छा डॉक्टर, हिफाजत की जरूरत जान पड़ी।"[33]

डॉक्टर और मरीज के संवाद द्वारा अस्पताल के वातावरण तथा डॉक्टर की पात्रगत विशेषता को व्यंजित किया गया है।

"उन्हें आज़ाद कर दो। बेचारी कितने सालों से तुम्हारे कमरे मैं कैद पड़ी है।"

वह बोला - "शाबास, मेरी कहानी के लिए अच्छा शीर्षक मिल गया - कमरे में कैद चप्पलें।"

मैंने कहा - "तुम्हें कहानी की पड़ी है। मैं उनके फण्डामेटल राइट्स की बात कर रहा हूँ।"[34]

"क्यों पोंछ दिया? भगवान का तिलक भी कोई पोंछता है?"

"जी! उसने कहा कि पुलिस की वरदी के साथ तिलक नहीं लगाते।"

"क्यों?" साहब ने पूछा, "किस शास्त्र में लिखा है?"

"पता नहीं जी!" मातापरसाद बोला, "वह कहती है कि लोग मुझे भगत समझ लेंगे।"

"तो क्या होगा?"

"जी! भगत समझकर रिश्वत देते हुए सब डरेंगे। हमारी ऊपरी आमदनी मारी मारी जाएगी।"

"नहीं मारी जाएगी।" साहब बोले।, "भगत भी भगवान का प्रसाद ले सकता है। वह रिश्वत नहीं, चढ़ावा है।"[35]

यहाँ संवाद शैली के द्वारा पुलिस व्यवस्था में प्रसादी के रूप में ली जानेवाली रिश्वत पर प्रहारात्मक व्यंग्य किया गया है।

"ग्वाला कहता - "छोड़ दो मालक।"

वह कहता - "तुम भी भ्रष्टाचार छोड़ दो।"

ग्वाला कहता - हुजूर भ्रष्टाचार से तो गृहस्थी चलती है। विशुद्ध दूध बेचूँगा तो शुद्ध गृहस्थी कैसे चलेगी।"

वह कहता - "फिर मेरी कैसे चलेगी?"[36]

यहाँ घूस लेने तथा देने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"आप मेरी कितनी फीस माफ करा देंगे?"

"पूरी"

"किताबें?"

"समूचा सेट, परीक्षा तक के लिए।"

"हाकी की कैप्टनशिप के लिए कोशिश करनी होगी।"

"करूँगा।"

"अमूक अध्यापक ने कहा है कि छात्र-यूनियन का सेक्रेटरी बनवा दूँगा।"

"मैं प्रेसिडेंट बनवाने का वायदा करता हूँ"[37]

यहाँ शिक्षण तथा खेल क्षेत्र में व्याप्त विसंगति पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

"'पुष्पा' 'बेलबाटम' तथा 'कमीज' धारण किए गए थी। बुआ सास का अभिवादन करती हुई बोली।"

'गुड मार्निंग टु यू, वेल कम होम!

वे कुछ समझ नहीं पाई। आतें ही भोलानाथ से बोली, 'दरवाजे पे कौन छोरा हे, गुड-गुड कर रह्यो, में तो भैया, गुड लाइ नाय। कछु और भी कह रह्यो, बो कछू, समझि में नाइ आई।

भोलानाथ बोले - 'अरी बहन, वह छोरा नहीं है, तेरे भतीजे की बहू है। मुझे पहचान नहीं पायी होगी। गुड-गुड नहीं, अपने आप से गुड मार्निंग कही होगी।[38]

यहाँ पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करनेवालों क रंग-ढंग को अभिव्यंजित किया गया है।

"आप के पति क्या काम करते हैं?"

"जी..... वे काम करने के लिए बचे ही कहाँ हैं?"

"मतलब।"

"उनके मरे दस साल हो गए।"

"दस साल? क्या कह रही हैं आप? आप की गोद में डेढ़ साल की लड़की है, आस-पास और छोटे-छोटे बच्चें हैं। यह सब, मेरा मतलब.....?"

"अजी बाबूजी, वे नहीं है तो क्या हुआ? मैं जिन्दा हूँ।"[39]

यहाँ स्त्री के चारित्रिक गुण को व्यंजित किया गया है।

"दूसरे ने हिदायत दी - 'टी. सी. को दस-पाँच जरूर पकड़ा देना, नहीं तो खिट-खिट करेगा.....।

मैंने कहा - 'मेरा तो रिजर्वेशन है - कैसे करेंगा.. ...?'

उन्होंने कहा - 'तो भी करेगा। जरूर करेगा! और पकड़ा देगी तो अच्छा रहेगा! सभी पकड़ाते हैं। अपने देश की परम्परा है! इसके हिसाब से चलना चाहिए।"[40]

रेल्वे में टी. सी की रिश्वत लेने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"हुहुं! तुम जैसे चपड़कनातियों की लाटरी नहीं, कुड़की निकलती है!..... हाँ, तो तुम्हारी राशि मीन है। यानी मछली!"

"यार वह मछली तो नहीं जो गोमती के किनारे ढेरों मरी पाई गयी?"

'तुम उससे भी सस्ते हो! लो कलेजा थाम कर अपना भविष्य सुनो!'

"मैंने उनका कलेजा थाम लिया और सुनने लगा इस राशि वाले लोगों का भाग्योदय हो रहा है..... मंगल शनि पर हावी है..... काफी धन लाभ होने की संभावना है!....."[41]

मनुष्य की खोखली राशि फल में अंधविश्वास रखने की मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"पूछा - "क्योंजी, तुमने मेरी कलम देखी है?"

बोला - "कलम बाबूजी?"

मैंने कहा - "हां, हां, कलम।"

बोला - "वही न जिससे आप रोज लिखतें हैं?"

मैने कहा - "हां, हां, वही।"

बोला - "कल ही तो आपने उसमे स्याही भरी थी।"

मैंने कहा - "बिल्कुल वही! जरा जल्दी से ले तो आ उसे।"

बोला - "बाबूजी, आज तो मैंने उसे नहीं देखा। क्या गुम हो गयी है?"[42]

यहाँ संवादों के माध्यम से मनुष्य की भूलने की आदत को व्यंजित किया है।

"क्या हो गया तिवारी जी?

"यार, चरखा नहीं मिल रहा है।"

"चरखा? यह क्या होता है?"

"यार, होती है एक चीज। लकड़ी की, लम्बी - सी। पहिया सा लगा होता है। गांधी जेंती के दिन लगता है।"

"हम खोजें?"[43]

इन संवादों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के पतन तथा अपने राष्ट्रपिता को भी न जानने वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"हिन्दुस्तानी होने के कारण क्या आपको हिन्दी नहीं आनी चाहिए?

"हम हिन्दी बोलते तो हैं जी। अब क्या हम अपनी चिट्ठी-पत्री भी हिन्दी में ही लिखें?"

"क्यों, चिट्ठी लिखने में आपको तकलीफ है?"

"जी वो स्पैलिंग मिस्टेक का डर लगा रहता है।"

"क्या अंग्रेजी में स्पैलिंग मिस्टेक का डर नहीं होता?"

"अजी वो तो अंग्रेजी डिक्शनरी देख लेते हैं, किसी से पूछ लेते हैं।"

"तो क्या हिन्दी में डिक्शनरी नहीं होती?"

"होती है, जरूर होती है, पर देखने में मुश्किल पड़ती है।"[44]

हिन्दुस्तानी होते हुए भी हिन्दी से अधिक अंग्रेजी भाषा के प्रति प्रभावित रहने वाले लोगों पर व्यंग्य किया गया है।

"लड़की के एक करीबी रिश्तेदार एक दिन आये और बहुत गम्भीर होकर कहने लगे - "लड़की ने अच्छा नहीं किया। ढेर सारे पढ़े-लिखे खानदानी लड़के मिलते थे, पर लड़की उस लड़के के लिए अड़ गयी। बेचारे माँ-बाप की क्या करते!"

"मैंने पूछा - "लेकिन अब तो शादी हो गयी, अब इन बातों का क्या फायदा? एक ऐसा विवाह हो गया तौ कौन-सा पहाड़ टूट पड़ा!"

वे हताश होकर बोलें - "पहाड़ तो अब टूटेंगे, भइया! उस लड़की ने एक ट्रेण्ड बना दिया न, अब हम किस-किस लड़की को सम्हालेंगे! बेटियाँ कालेज जाती हैं; उनकी कहाँ तक रखवाली करेंगे।"[45]

यहाँ संवाद शैली द्वारा खोखली रूढ़ि तथा विचारों को माननेवालो की कानाफूसी को अभिव्यंजित किया गया है।

"आपने तुलसीदास का नाम सुना है?"

"जी नहीं।"

"रामचरितमानस का?"

"क्या यह रामायण जैसी है?"

"जी हां!"

"सुना ही नहीं, टी.वी. पर देखा भी है सर!"

"इसके लेखक कौन थे?"

"सर! रामानंद सागर!"[46]

यहाँ इन संवादों के माध्यम से जनता का टी.वी. के प्रति अत्याधिक प्रभाव को व्यंजित किया गया है।

"अफसर ने कहा - 'जटाशंकर कुछ और कह रहा था?' 'हां, सर, वह कह रहा था कि वह आपका ट्रांसफर करवा कर रहेगा।' अफसर हंसा, 'चिंता मत करो, कल वह खुद 'ट्रांसफरित' हो जाएगा। अच्छा सुनो कल से तुम बड़े बाबू की कुर्सी में बैठा करो, मैं तुम्हारा प्रमोशन करता हूं, इसी तरह तुम अपनी कर्मठता दिखाते रहे तो तुम्हें जितना लाभ हो सकेगा दिलवाऊंगा और ये देखो 200/- रूपये, कल जिस सेठ को हमने चेक दिया उसने कुछ रकम दी थी, उसमें तुम्हारा हिस्सा भी तो बनता है।"[47]

अफसर की चापलूसी करके प्रमोशन तथा ऊपर की कमाई पानेवाले कर्मचारी की वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

संवाद-शैली के अन्य उदाहरण:

'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'रोटी और घण्टी का सम्बन्ध', 'लंच'[48], 'एक पुलिस थाना सतयुग में', 'बब्बूमियाँ कब्रिस्तान में'[49], 'अमरीकन जांघिया'[50], 'जगाने का अपराध'[51], 'डॉक्टर', 'स्मगलर और देश की सीमा', 'सुनना और देखना', 'मेरे मुहल्ले का फूल'[52], 'चश्मे बददुर यानी चश्मे से दूर', 'बुढ़ऊ-बचवा संवाद', 'छात्र आक्रोश', 'और वह स्टार्ट हो गयी!', 'अथ श्री गुझियाए नमः', 'कृपया परे हटिए!.....में मछली हूँ!'[53], 'नाम बनाम इनाम', 'मातृभाषा बनाम पितृभाषा'[54], 'संस्कारों का शुद्धिकरण', 'शराफत में आफत'[55], 'रावण न हो पाने का संत्रास',
'फोन टेप न होने का दर्द', 'चुनाव-वर्ष-कार्यकर्ताओं की तलाश'[56] आदि व्यंग्य निबंधों में संवाद शैली देखी जा सकती है।

संवाद शैली के माध्यम से व्यंग्य में चुटीलापन तथा नुकीलापन आया है। कई व्यंग्यकारों के संवाद छोटे होते हुए भी अर्थ व्यंजक और तर्कात्मक हैं। संवाद शैली के द्वारा पात्र की चरित्रगत विशेषताओं तथा परिस्थितिजन्य व्यंग्य का प्रहारात्मक चित्रण प्रस्तुत हुआ है।

3) प्रतीकात्मक शैली

हिन्दी साहित्य में अंग्रेजी के 'Symbol' के पर्याय रूप में प्रतीक शब्द ग्रहण किया गया है। अर्थपूर्ण मानवीय अभिव्यंज़ना को प्रस्तुत करने में प्रतीक-प्रयोग

अत्यंत महत्त्व पूर्ण है। हिन्दी शब्द सागर में प्रतीक का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ-" 'प्रतीयते अनेन इति प्रतीक' अर्थात् जिससे प्रतीत हो या किसी वस्तु की अभिव्यक्ति है वह प्रतीक है।"[57] अमूर्त अथवा मूर्त भावों एवं विचारों को व्यंजित करने के लिए प्राय: प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग व्यंग्य निबंधों में बहुत ही कारगर हथियार के रूप से दृष्टिगत होता है।

"प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य (अथवा गोचर) वस्तु के लिए किया जाता है, जो किसी अदृश्य (अगोचर अथवा अप्रस्तुत) विषय का प्रतिविधान उसके साथ अपने सहचर्य के कारण करती है। अथवा कहा जा सकता है कि किसी अन्य स्तर की समान रूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है।"[58]

विविध प्रतीकों के द्वारा भाव एवं भाषा को सशक्त रूप से अभिव्यंजित किया जा सकता है।आज का व्यंग्य साहित्य प्रतीकों की दृष्टि से सम्पन्न है। साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंधों में प्रतीकों का प्रयोग व्यंग्य भाषा में टेढ़ापन लाने के लिए किया जाता है। थोड़े से शब्दो में व्यापक तथा गहरे भावों को अभिव्यंजित करने के लिए प्रतीक एक सक्षम माध्यम है। भाषा में प्रतीकात्मक प्रयोग शैलीविज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

व्यंग्य निबंध में प्रतीकों का प्रयोग शैली के रूप में किया गया है। शब्दों को निश्चित परिधि में बाँधने का प्रयास करते है तो शब्दों का सामर्थ्य दब जाता है। किन्तु प्रतीकात्मक शैली एक ऐसा भाषिक उपकरण है जो कम से कम शब्दों में अधिक कहना सामर्थ्य रखता है। व्यंग्य निबंध में प्रयुक्त कुछ प्रतीकात्मक शैली के उदाहरण इस प्रकार है- जैसे-

"सरकार कहती है कि हमने चूहे पकड़ने के लिए चूहादानियाँ रखी हैं।"[59]

यहाँ चूहा भ्रष्टाचार का प्रतीक बताया गया हैं।

"गणेशजी सूँड पर हाथ फेर गम्भीरता से कहते हैं, लेखक के परिवार के सदस्य हो, खाने-पीने की बात मत करो। भूखे रहना सीखो। बड़ा ऊँचा मज़ाक-बोध है श्री गणेशजी का (अच्छे लेखकों मे रहता है)। चूहा सुन मुस्कराता है। जानता है, गणेशजी टायटिंग पर भरोसा नहीं करते। तबीयत से खाते हैं, खिलाते हैं। अब निरन्तर बैठे लिखते रहने से शरीर में भारीपन तो आ ही जाता है।"[60]

यहाँ गणेशजी शासक तथा चूहे गरीब जनता का प्रतीक है। गरीब जनता की

महेनत से कमाया हुआ धन तथा पैसा, शासक खा - खा कर गणेश जैसे मोटे हो रहे है। इस उद्‌श्य को प्रतीकात्मक शैली के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

"एका एक मुझे लगा कि जीप पर तीन इल्लियाँ सवार है।"[61]

यहाँ 'इल्लियाँ' भ्रष्ट कर्मचारीयों के प्रतीक के रूप में हैं।

"देश में दूब उगाने की कला विशेष रूप से गोरों के जमाने में विकसित हुई थी, पर जहाँपनाह ने उसे इतने ऊँचे स्तर पर पहुँचा दिया था कि गेहूँ उगाने के मुकाबले दूब उगाना ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया, हालाँकि बाद में एक अल्पकालीन मजबूरी में उन्हे दूब की जगह सब्जी उगाने का भी फैसला करना पड़ा था।"[62]

यहाँ व्यंग्यकार ने अपने ही परिवेश का प्रतीकात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है।

"जैसे कालिदास को इस बैलगाड़ी से उत्कृष्ट साहित्य की प्रेरणा मिली थी, वैसे ही आजकल वह (बैलगाडी)प्रजातंत्र की प्रेरक शक्ति है। ये बैल कैबिनेट के समान हैं। गाड़ीवान प्रेसीडेंट का काम करता है जो बैलों को चलाता है और नहीं भी चलाता।"[63]

बैलगाड़ी के माध्यम से प्रजातांत्रिक सरकार की कार्यप्रणाली को अभिव्यंजित किया है।

"बैल को कांग्रेस ने अपना चुनाव चिन्ह रखा है क्योंकि उसमें बैल जैसे गुण है काम करते हैं आराम के साथ। जैसे बैल खेत में कुछ उगे या नहीं, उसी तरह हमारी सरकार योजनाएँ बना देती है, आगे वे पूरी हो या न हों।"[64]

यहाँ बैल के प्रतीक द्वारा राजनीतिक व्यंग्य किया गया है।

"तुम मुझे जला तो रहे हो, किंतु याद रखो, मेरे रोम-रोम से चिंगारी फूटेगी उस प्रत्येक चिंगारी से अलग-अलग रावण बनकर खड़े होगें और एसे नव-निर्मित रावण अपने कार्यकलापों में मुझसे भी ज्यादा ऊँचाई ग्रहण करेंगे। मेरे शरीर के कण-कण से बलशाली तथा काल के अनुरूप रावण तैयार होंगे।"[65]

यहाँ 'रावण' भ्रष्टाचार का प्रतीक है। हम भ्रष्टाचार को कितना भी कम करने की कोशिश करेगे, वह उतना ही बढ़ता जायेगा।

"मेरे मुँह में सोने के दाँत हैं। यदि मैं मुंह बन्द रखूं तो भला कौन उन्हें देख सकेगा? जब मैं जोर से हंसता हूँ तो मेरे दाँतों की नुमाइश हो जाती है और लोग मुझे धनवान समझने लगते हैं। पंडित नहेरू तो केवल मुंह में चांदी का चमचा लेकर पैदा हुए थे, परन्तु मेरे मुख में तो पूरे दो तोले सोना रखा हुआ है।'[66]

यहाँ 'सोने के दाँत' दिखावा पसंद लोगों का प्रतीक है।

"साम्प्रदायिकता का रावण हमें आपस में लड़ा देता है और स्वयं हँसता है। इस रावण ने देश का जितना नुकशान किया, उतना किसी ने नहीं किया। ऐसे रावण के सिर कुचलने में क्या हम सक्षम नहीं है? यह रावण तो हमारी संस्कृति, सभ्यता, एकता और भाईचारे की भावना को ही नष्ट किये जा रहा है। इस आततायी को हमें हमेशा के लिये जलाना होगा।"[67]

यहाँ 'रावण' समाज में व्याप्त विसंगतियो का प्रतीक है।

शीर्षकों में भी प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग व्यंग्यकारों ने किया है। जैसे –

'वैष्णव की फिसलन', 'सदाचार का तावीज', 'पगडण्डियों का जमाना', 'बेईमानी की परत', 'विकालांग श्रद्धा का दौर (हरिशंकर परसाई); 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'भैंसन्हि मौंह रहत नित बकुला' (शरद जोशी); 'खूली धूप में नाव पर', 'लोकगीतों में टंका लाल तिकोन' (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'भेड़ की नियति', 'हर साल बढ़ रही है रावण की ऊँचाई'(हरि जोशी); 'कैनोपी का स्वयंवर', 'कबूतर', 'रेडीमेड युद्धविराम' (नरेन्द्र कोहली); 'एक मंत्री स्वर्गलोक में (शंकर पुणताम्बेकर) आदि।

अत: स्पष्ट है कि प्रतीकों के प्रयोग द्वारा व्यंग्य के सौंदर्य में यथेष्ट अभिवृद्धि हो सकी है।

4) मिथकीय शैली

'मिथक' अतीत का गौरव है। इसके द्वारा समग्र संस्कृति एवं राष्ट्र की चेतना का इतिहास प्रस्तुत होता है। नगेन्द्र के अनुसार 'मिथक' शुद्ध रूप से संस्कृत का शब्द नहीं है। 'मिथस्' या 'मिथ' जिसका अर्थ है परस्पर; तथा 'मिथ्या' जो असत्य का वाचक है।

"मिथक का मतलब है कोई पुराण कथा जिसके जरिये, तर्क से परे, आदिम-चेतना की अनायास अभिव्यक्ति होती है या हो और प्रकृति की शक्तियों का अद्‌भुत दैहिक आकार में प्रदर्शन होता है या हो।"[68]

मिथक पौराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रों तथा घटनाओं का चित्रण है; जिसमें अतीत में घटी घटना को वर्तमान में उजागर किया जाता है। व्यंग्य निबंधों में मिथक का प्रयोग शैली के रूप में भी किया गया है। व्यंग्य निबंधों में मिथकीय शैली के माध्यम से विषमताओं तथा विसंगतियों को उजागर करने के लिए किया

गया है। साठोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य में प्रयुक्त मिथकिय शैली के कुछ उदाहरण इस प्रकार है। जैसे-

"मेघ कहेगा - "अरी किस फेर में पडी है तू !मैं देखकर आया हूँ, तेरा पति रामगिरि के क्षेत्र मे रँगरेलियां मना रहा है। वह तुझे याद भी नहीं करता , सन्देश भी नहीं भेजता। तू अपनी यह 'चार दिन की चाँदनी' क्यों वेस्ट करती है?"

यक्षिणी के तेवर चढ़ जाते हैं, "अच्छा, मुए की यह मजाल!"

"बरसों बाद यक्ष आता है तो मोहल्लेवाले लम्बे हाथ कर-कर बताते है, "अरे, हमने तो तुझे पहले ही बोला था भाई, कि घरवाली को साथ ले जा, पर तू नहीं माना। ले, वह किसी 'मेघ' के साथ भाग गयी!"[69]

यहाँ पौराणिक पात्र द्वारा आधुनिक युग में व्याप्त सामाजिक विसंगति को प्रस्तुत किया है।

"मतलब यह कि जिस गाय को तुमने दान में दिया था, वह ब्रह्मण के घर भी नहीं पहुंची। आधे रास्ते में ही मर गयी। चूंकि आधे रास्ते तक का तुम्हारा पुण्य था, इसलिए मैंने आधी वैतरणी पार करा दी।" इतना कहकर गाय वहीं डूब गयी।

मास्टर की आत्मा डूबने-उतराने लगी। अभी आधी वैतरणी बाकी थी।"[70]

"उस लड़के की कंकड़ी से उस दिन गोपी की दही हांडी फूट गयी तो वह गुस्सा नहीं हुई। उसके पास जाकर बोली, बस अब तू नौकरी लायक हो गया है। जा, कौरवों के दरबार में तुझे जरूर कोई ऊँची जगह मिल जाएगी।"[71]

यहाँ दो प्रकार की पौराणिक घटनाओं के कथ्य को आधुनिक युग में व्याप्त भ्रष्टाचार के संदर्भ में व्यंजित किया गया है।

"देखिए, कल तक वे हमें सारथिपुत्र कहते रहे। आज हमारे दरवाजे आये है तो वह कह रहे हैं - कहो, सूर्यपुत्र कैसे हो।"

हमने कहा, "क्या कवच-कुण्डल लने आये हो?"

सुनकर वे हँस दिये। बोले, "दानवीर कर्ण मैं वोट लेने आया हूँ"[72]

यहाँ महाभारत के प्रसंग द्वारा वर्तमान युग के नेता तथा जनता के बिच मात्र वोट लेने के संबंध को अभिव्यंजित किया है।

"पहले तो रावण को स्वयं सीता-हरण के लिए अपने घर से निकलना पड़ता था, लेकिन अब तो वह जमाना गया है मार्डन कुँआरी सीताएँ अपने आप रावण के

घर पहुँच जाती है।"[73]

यहाँ रामायण के प्रसंग का मिथक है। जिसके द्वारा आधुनिक मोर्डन नारी में आये परिवर्तन तथा उसके चारित्रिक गुण को व्यंजित किया गया है।

"भगवान कृष्ण गायों को चराना पसंद करते थे, पर मोर्डन कृष्ण स्वयं ही चरना पसन्द करते हैं।..... वे स्वयं तो चरते ही हैं पर उनकी गायें पड़ौसी के खेत पर चर लेती हैं। पहले गोपियाँ स्वयं ही कन्हैया को ढूँढ लेती थीं किन्तु अब कन्हैयाँ गोपियों को ढूँढने स्वयं निकलते हैं।"[74]

यहाँ मिथकीय शैली द्वारा परिस्थितिजन्य बदलाव को व्यंजित किया गया है।

"सुदामा द्वारका की ओर चल दिए। उनकी पोटली मे थोड़ा-सा गुलाल था। उन्होंने अपनी पत्नी को इस यात्रा के बारे में कुछ नहीं बताया। वह उसे चौंकाना चाहते थे। सुदामा ने द्वारका में श्रीकृष्ण के महल के पास पहुँचकर देखा कि वहाँ आदमी कम सैनिक अधिक थे। और गिद्ध सी दृष्टि से इधर-उधर देख रहे थे।"[75]

आधुनिक कृष्ण यानी आज के नेता के राजनैतिक रूतबे को मिथकीय शैली के माध्यम से व्यंजित किया है।

"प्रोफेसरों की एक नहीं चल रही और वे वहाँ इसलिए उपस्थित थे क्योंकि अन्त तक उपस्थित रहना उनका धर्म था वर्ना कभी के अपने घर भाग जाते।

जब अभिमन्यु को सुस्थिर गति से अपनी ओर आता देखा तो वह परीक्षार्थी रिवालवार तानकर गरज उठा, "अब तू मेरे हाथ से जीवित नहीं छूट सकता, तुझे जीवन से हाथ धोना ही पड़ेगा।" किन्तु इससे अभिमन्यु की गति में कोई अन्तर नहीं आया.....!

राजेन्द्र अभिमन्यु ने जाते ही उसकी जेब में हाथ डाल दिया जैसे साँप बाँबी में घुस गया हो। और फुसाफुस कर कहा, "मुर्ख, गुसलखाने में जाकर काम के पृष्ठ फाड़ ले और भय का अभिनय कर किताब मुझे दे वर्ना में भी आज तुझे नहीं छोड़ूँगा।"[76]

"हे मधुसूदन! मेरा कर्तव्य बताओं श्रीकृष्ण ने प्रकट होकर कहा, 'हे पार्थ, परीक्षा भवन में गन्धारी हो जाओ। कीचड़ में कमल के भाँति हो जाओ, अपने विवेक की नसबन्दी करालो, पुरूषत्त्व भूल अभयलिंगी हो जाओ। परीक्षा की बलिवेदी पर शहीद मत हो। यहाँ तो हर बरस मेले लगते हैं। चिंता चिता समान

है। मुक्त करो, मुक्त रहो।' और भगवान अन्तर्धान हो गए।"[77]

ऊपर्युक्त दो उदाहरणों में मिथकीय शैली द्वारा परीक्षा भवन में हो रही अनीति पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

"कहते हैं (पता नहीं सच है या नहीं) कि पृथ्वीराज चौहाण, गौरी से केवल इसलिए हार गया था, क्योंकि गौरी ने अपने सेनाओं के सामने दो-चार सौ गौ मातायें जमा कर रखी थीं। सिद्धांत वादी ने गौ-रक्षा करके शास्त्र और सिद्धांतों की बात तो मान ली, किन्तु देश की हजारों वर्षों की परतन्त्रता का सूत्रपात कर दिया।"[78]

यहाँ ऐतिहासिक पात्र के द्वारा गाय-भक्ति की नीति पर व्यंग्य किया गया है।

सारांशत: कहा जा सकता है कि मिथकीय शैली में कथ्य पौराणिक तथा ऐतिहासिक होता है, किन्तु इसका संबंध वर्तमान युग से होता है। इसमें व्यंजना से अर्थ ग्रहण किया जाता है। साठोत्तर व्यंग्य निबंध साहित्य में कई स्थानों पर विसंगतियों को अभिव्यंजित करने के लिए पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथा, पात्र तथा घटना का उल्लेख किया गया है। मिथकिय शैली युग बोध का प्रतीक है, जिसमें साहित्य का ओज गुण समाहित है।

5) फन्तासी शैली

ग्रीक शब्द 'Phantasia' से अंग्रेजी 'Fantastic' तथा 'Fancy' शब्द की व्युत्पत्ति मानी गई है। अंग्रेजी साहित्य में 'कल्पना' के लिए Fancy तथा Imagination जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। हिन्दी में इन्हीं शब्दों का प्रयोग 'फन्तासी' के रूप में किया गया है।

'फन्तासी' कल्पना तत्त्व पर आधारित होती है। इसे चमत्कारिक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। जिससे पाठक का कौतूहल बढ़ता है। 'फन्तासी' प्रयोग साहित्य की अद्‌भूत अभिव्यक्ति है, जिसमें प्रतीक, रूपक, वक्रोक्ति, अतिशयोक्ति और उत्प्रेक्षा जैसे भाषिक उपकरणों की सहाय से साहित्यकार अपने कथ्य को संप्रेषित करता है।

कई व्यंग्यकारों ने व्यंग्य को अभिव्यंजित करने के लिए कल्पना तथा तरंग के सहारे 'फैन्टसी' अर्थात् 'फन्तासी' का शैली के रूप में प्रयोग किया है। व्यंग्य निबंध में बुद्धि तत्त्व के सहयोग से कल्पना का आलम्बन पाकर व्यंग्य को

अभिव्यंजित किया गया है। व्यंग्य निबंधों में प्रयुक्त फन्तासी शैली के कुछ उदाहरण -

"वे नहीं मानेंगे। वे मेरा नाम इतिहास की पोथी में लिख देंगे। इसके पीले पुराने पन्नों में मेरा नाम काले टाइप में दिखेगा और छात्र मार मार कर उसे रटेंगे। वे पता नहीं किस तरह मुझे याद रखेंगे, मैं हिन्दी साहित्य के इतिहास में रहूँगा , तो मूझे याद रखना मजबूरी हो जायेगी। हो सकता है वे मुझे सेठ गोविंददास के समकालीन अन्य लेखकों के रूप में याद रखें। मैंने देखा कि यश के इस विस्तृत कीचड़ में मेरा नाम एक कीड़े की तरह रेंग रहा है। मैं सोचने लगा कि मैं बिना कुछ लिखे मर क्यों नहीं जाता।"[79]

यहाँ 'फन्तासी' शैली द्वारा साहित्यकार खुद अपनी निजी परिस्थिति तथा भविष्य का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करता है।

"ब्रह्मा बड़े प्रसन्न हुए। अब उनके बिना भी सृष्टि चल सकती थी। उन्होंने लँगोट कसा और एक-एक लड़की को बालों से पकड़-पकड़ पृथ्वी की ओर फेंकना प्रारम्भ किया। बाल खींचने के कारण कुछ लड़कियों की गरदन सुराहीदार हो गयी। सारी-की-सारी लड़कियाँ पृथ्वी पर सिर के बल गिरी और इसका परिणाम यह रहा कि उनकी बुद्धि मोटी हो गयी। फेंकने के करण लड़कियों कि जुबान जो उनके मुँह से बाहर निकली वह आज तक उसी स्थिति में है। कमर पर चोट आयी और छातियाँ आगे निकल आयी। गिरने की इस क्रिया में स्त्रियाँ बदसूरत हो गयी वे बाद में चलकर पतिव्रता कहलायी।"[80]

यहाँ स्त्रियों की व्यत्पत्ति तथा व्यवहार बुद्धि को व्यंग्यकार ने काल्पनिक रूप से अभिव्यंजित किया है।

"सरकार ने सतयुग की घोषणा कर दी। उधर सरकार ने घोषणा की और एकदम, सत्यवादी हो गये। यही तो हमारी विशेषता है। लोग सरकार से प्रसन्न थे कि उसने सतयुग लागू करके उन्हें इस युग में जीने का अवसर प्रदान किया।"[81]

"तुम लोग लौट आए?" गांधीजी ने आश्चर्य से पूछा, "इतनी जल्दी।"

"गृह-मंत्रालय ने हमें बीट नहीं करने दी।" कबूतर उदास स्वर में बोला।

"उनका कहना है कि इस समय देश में विदेशी अतिथि आए हुए है, इसलिए सचिवालय पर केवल विदेशी कबूतरों को ही बीट करने की अनुमति दी जा सकती हैं।" कबूतर बड़ी मुश्किल से अपनी बीट रोक रहे थे।"[82]

यहाँ विदेशियों के सामने भारतीय (लोगों) को नीचा समझ ने की मनोवृत्ति पर फन्तासी शैली द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"शलजम ने खूब बहादूरी दिखाई और बड़ी फुर्ती से कूद कर लौकी की कमर तोड़ दी। देखते-देखते यह युद्ध आलमगीर बन गया। कोई भी सब्जी निष्पक्ष न रह सकी, यूरोप के अनेक छोटे-मोटे देशों की तरह इन्हें भी एक या दूसरे के पक्ष में लड़ाई में भाग लेना पड़ा। अब जनाब वह हुल्लड मचा कि तौबा ही भली। हम कई कदम पीछे हटकर खड़े हो गए, क्योंकि इस तरह से साम्प्रदायिक झगड़ों में प्राय : राही और परदेशी ही मारे जाते हैं।"[83]

यहाँ सब्जिओं के झगड़ों के द्वारा प्रांतीय दंगा-फसाद को व्यंजित किया है।

थानेदार ने कहा - "हनुमान, साफ बतलाओ, राम कहां है?"

हनुमान ने कहा - "सरकार, राम जरूर बंबई गये होंगे। भागे हुइ मनुष्य बम्बई ओर ही जाते हैं।"

थानेदार ने कहा - "ठिक है। राम का हुलिया लिखाओ।"

पुलिस राम को ढूंढ रही है।"[84]

यहाँ फन्तासी के द्वारा युवा वर्ग में व्याप्त बम्बई के प्रति आकर्षण तथा इसी कारणवश गृहत्याग की वृत्ति पर व्यंग्य किया है।

"भगवान ने मुस्कराते हुए पूछा - "क्यों नारद, मजे में तो हो? अभी से लौट आये?"

नारद बोले - "लौट आया यही क्या कम गनीमत है! यदि वे मुझे वैदिक काल के मनुष्य की स्लिप लगाकर किसी अजायबर में रख देते तो मैं उनका क्या कर लेता?"[85]

मनुष्य ने अपने आचार-विचार की प्रवृत्ति द्वारा नारद जैसे स्वर्ग के व्यक्ति को भी नहीं बक्षा। इसी घटना को यहाँ फन्तासी शैली द्वारा व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

"नारदजी उल्लू के नज़दीक जाकर बोले, "क्यों बे उल्लू, तू यहाँ मौज-मस्ती कर रहा है? और वहाँ विष्णुजी बिना लक्ष्मीजी के एक विधुर का जीवन बिता रहे है। जल्दी बता, लक्ष्मीजी कहाँ है?"

नारदजी के सामने पाकर उल्लू सकपका गया और धीरे से बोला, "गुरूवर, लक्ष्मीजी तो 'स्विस-बैंक' में कैद है। कोई पता बताता ही नहीं कि किस-किस

एकाउंट में कैद है? मैं उनके बिना वापस कैसे जाऊँ? विष्णुजी तो मेरा क्रिया-कर्म ही करवा देंगे।"[86]

मनुष्य की अतिशय धन लोलुपता तथा धन संग्रह की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

"उन्होंने कड़क कर पूछा - "इस वक्त क्या काम है?"

यमदूत बोला - "आप को यमलोक चलना होगा।"

मंत्री महोदय ने प्रश्न किया - "वहाँ तक जाने के साधन का प्रबन्ध कर लिया है।

यमदूत ने कहा - "खिड़की कै बाहर देखिए।"

बाहर एक जीर्ण-शीर्ण काले रंग का छोटा-सा विमान खड़ा था। उसे हिकारत से देखते हुए मंत्री महोदय ने कहा - "जाकर कह देना यमराज से, हम दूसरे का मातम मनाने भी एयर-बस में जाते हैं। इस टूटे-फूटे जहाज मैं बैठना हमारी शान के खिलाफ है, और अभी मध्यावधि चुनाव से पहले हमें फुरसत भी नहीं है।"[87]

यहाँ नेता के रूतबे को व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

कुछ अन्य फन्तासी शैली के उदाहरण:

'अतृप्त आत्माओं की रेलयात्रा', 'एक नाजुक सवाल भूत प्रेतों से बातचीत', 'पुराने पेड़ की बातें'[88], 'मुन्शी प्रेमचन्द की जन्म शताब्दी'[89], 'सब्जी कान्फ्रेंस', 'भारत का राष्ट्रीय पक्षी'[90], 'इक्कीसवीं सदी का गर्भधान विधायक', 'पाणिग्रहण अधिनियम'[91], 'सत्यनारायण की कथा पर मेरी जासूसी फिल्म', 'अभिशप्त आविष्कार', 'प्रमोशन के टैण्डर'[92], 'हनुमान जब लंका में', 'सीता कांड : लंका संसद में', 'दो सौ रूपए किलो'[93], 'लंका-दहन का वीटिंग रिट्रीट', 'आज नकद कल उधार', 'लक्ष्मीजी मृत्युलोक में'[94], 'व्रत-कथाओं की शैल्य क्रिया'[95] 'स्वर्ग से लौटा जटायु'[96] आदि शीर्षक रचनाएँ इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

व्यंग्यकारों ने व्यंग्य निबंधों में यर्थाथ परक विसंगतियों का चित्रण फन्तासी शैली के माध्यम से किया है। इतना ही नहीं इसके प्रयोग से व्यंग्य के कथ्य में प्रभावोत्पादक रम्यता आई है।

6) प्रश्नोत्तर शैली

यह संवाद शैली का ही एक प्रकार है। किन्तु इसमें प्रश्नों के रूप में संवाद

बोले जाते है और उसके उत्तर भी दिये जाते हैं। इसलिए यह प्रश्नोत्तर शैली कही जाती है। इसे वार्तालाप शैली भी कहते है। प्राय: कहीं-कहीं पर व्यंग्यकारों ने व्यंग्य में तिव्रता लाने के लिए इसका प्रयोग किया है। व्यंग्य निबंध में इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार के है। जैसे-

"आपको यहाँ पहुंचने में आध घण्टे की देरी कैसे हो गयी?"

"क्या आते समय आपको इंजन में कोई खराबी जान पड़ी?"

"क्या सुशिक्षित इंजीनियर आपके जहाज के प्रत्येक कल पुर्जे की निहायत होशियारी से चेकिंग कर रहे हैं?"[97]

"प्रश्न : एक सर्वे के अनुसार इस कस्बे मे आवारा ढ़ोरों की तथा कवियों की संख्या एक सी है। आपका क्या मत है?

उत्तर : ऐसा कहने वाले धूर्त हैं। कवियों को देखते ही उनके पेट में आग लगती है। बात साफ है कि कवि ढ़ोर नहीं हो सकते और ढ़ोर कविता नहीं लिख सकते।

प्रश्न : परिवार-नियोजन के माध्यम से सरकार तो प्रसव-पीड़ा को कम करना चाहती है। फिर किस डॉक्टर ने आपको सलाह दी है कि जान बूझकर आप इस प्रसव-पीड़ा का वरण करें?

उत्तर : प्रसव तो साधन है, साध्य तो सृजन है। सृजन के हर्ष को झेलने के लिए प्रसव का दु:ख तो सहन करना ही होगा। काव्य-सृजन में परिवार-नियोजन कैसा?"[98]

"लड़की हुई है ठाकुर साहब! क्या नाम रखूँ?

तुम्हारा क्या नाम है?

लाहौरीलाल।

तुम्हारे पिता का क्या नाम है?

पेशावरसिंह

तो लड़की का नाम रावलपिन्डी ठीक रहेगा।"[99]

ऊपर्युक्त प्रश्न शैली के उदाहरण द्वारा हास्य-युक्त व्यंग्य किया गया है।

"प्रश्न : महोदय! सुना है, विशिष्ट व्यक्तियों की आजीबोगरीब तलब, नशा या लतें हुआ करती हैं। इनमें सबसे अहम तलब होती है कुढ़ने की..... क्या यह सच है?

उत्तर : आपने ठीक सुना है। हम इस कुढ़ने की क्रिया को तलब या लत नहीं, साहित्यकार का धर्म मानते हैं। और फिर आप जानो कि 'सुखिया सब संसार है, खाये और सोवें' की तरह यह भी कोई जिन्दगी है कि न जले, न कुढ़े, न खाक होवे? चल चुकी इस तरह रचनात्मक प्रक्रिया की गाड़ी! अजी पैट्रोल ही नहीं, तो गाड़ी कैसे चलेगी?"[100]

"एक नौजवान - ये पुराने रद्दी कागज कैसे हैं?

कबाड़ी - अदब से नाम लीजिए, साहब! फिल्म 'गरीब की तोप' का मुकम्मल सिनेरियो है! ..... सिर्फ 'दी एण्ड' के पन्ने गायब है!.....

नौजवान - हें हें हें..... 'राजा जानी' का सिनेरियो नहीं है?

कबाड़ी - आपकी उम्र क्या है?..... नहीं मालूम?.... घर पूछ के आइये। यहाँ सारा माल 'फार एडल्टस ओनली' है, हां!..... आईए बहनजी! क्या दिखाऊँ?..... नादिया का हन्टर, या कुक्कू का लहंगा?

लड़की - यह सुराना झुमका किसका है?"[101]

यहाँ रद्दी माल को 'एन्टिक' कहके बेचने की कला को प्रश्न शैली द्वारा अभिव्यंजित किया गया है।

"यह क्या है?"

"यह हरी घास पर क्षण भर एक मिरगा का चित्र है।"

"यह कैसे? इसमें हरी घास कहाँ है?"

"हरी घास मिरगा सब खा गया?"

"और मिरगा कहाँ है?"

"मिरगा खाकर चला गया। इसलिए तो 'क्षणभर' कहा है।"

"और कोई सवाल तो नहीं है?"

"नहीं।"[102]

"आपका सैद्धांतिक दृष्टिकोण क्या है?"

"मैं आपका सवाल नहीं समझा।"

"मेरा मतलब हे कि आपकी कोई 'पोलिटिकल आइडियोलाजी' है?"

"मैं किसी दूसरे पर यकीन नहीं करता। मुझे सिर्फ अपने बाहुबल पर भरोसा है।"[103]

यहाँ प्रश्न शैली के द्वारा राजनैतिक व्यंग्य को उजागर किया गया है।

प्रश्न शैली के अन्य उदाहरण :

'समस्या सुलझाने में बुद्धिजीवी का योगदान'[104], 'अथ महापुरूषस्य लक्षणम्..... चरित्रम्. ... हरकतम्'[105], 'स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी : अस्वास्थ्य उत्तरोत्तरी"[106] आदि।

प्रश्न शैली के अंतर्गत प्रश्नों के जोरदार उत्तरों द्वारा व्यंग्य लेखकों ने आज की विसंगतियों का पर्दाफाश किया है। आज का व्यंग्यकार प्रश्नों का सकारात्मक प्रयोग करता है और पाठकों में एक वैचारिक क्रांति पैदा कर देना अपना कर्तव्य मानता है।

7) पत्र शैली

जहाँ विषय वस्तु का उद्‌घाटन तथा पात्रों का चरित्रचित्रण पत्रों के माध्यम से होता है वहाँ पत्रात्मक शैली मानी जाती है।व्यंग्य निबंधों में प्रायः इस शैली के उदाहरण मिलते हैं। जैसे -

"पूज्य कुन्दनलालजी,

वोटों की गिनती करवाकर कलेक्ट्रेट से सीधा नर्मदाबाई के घर पहुँचा इस आशा से कि आप मिल जाओगे पर पता लगा कि आप निराश होकर जा चुके हैं। मेरा जी भारी था, मैं सुखलाल के घर जाकर सो रहा। आपकी हार मेरी हार है, क्षेत्र की जनता की हार है। हार की पीड़ा तो थी ही सही पर यह सुनकर और भी मन को दु:ख हुआ कि जाते समय कुन्दनलालजी कह गये कि सेवकराम ने मेरा रूपया खाया और काम नहीं किया जिसकी वजह से मुझे हारना पड़ा। ठीक है, भाई साहब, आप कह सकते हैं।"[107]

यहाँ राजनैतिक विसंगतियों को इस पत्र द्वारा उजागर किया है।

"आपने अपने पत्र में छात्र-जीवन में साधना पर बड़ा बल दिया है। मैं आपसे सहमत नहीं हो सकता। साधना के दिन तो कभी के लद गये; अब तो मौसमी चटर्जी का मौसम है। इस बार आओगे तो साथ-साथ तस्वीर देखने चलेंगे और उसके बाद बीयर पियेंगे। अब तो छात्रवास में ही बार खुल गया है।"[108]

इस पत्र शैली द्वारा छात्रों की फिल्में देखने की चाहत तथा ऐय्याशी को वर्णित किया है। तथा दूसरी सामाजिक विसंगतियों को भी उजागर किया गया है।

- "यह मत सोचना कि मैं ईर्ष्या कर रहा हूँ। मैं तो सिर्फ आधुनिक समाज-विज्ञान का नुस्खा दोहरा रहा हूँ। वैसे, मुझे तुम्हारे अमरीका जाने से बड़ी खुशी है। यहाँ लौटते ही जब तुम 'फ्लैट' को 'अपार्टमेन्ट' और 'ट्रंककोल' को 'लांग डिस्टेन्स

कोल' कहोगे तो यकीन मानो, सबसे पहले मैं ही उछलकर कहूँगा, "जानते नहीं, मेरा दोस्त है? अभी-अभी अमरीका से लौटा है।"[109]

यहाँ पत्र में विदेशी संस्कृति के प्रति आकर्षण को व्यंजित किया है।

"प्रिय लतीफाजी,

आप तो बड़ा अच्छा व्यंग्य लिख लेती है। आपका व्यंग्य पढ़कर मुझे लगा कि आपको तो यहाँ होना था, मेरे पास। वैसे बुरा न मानों तो पूछ रहा हूँ कि आप कस्बे में क्या कर रही हैं? ये महासमुद्र किधर होता है, जहाँ आप रह रही हैं? क्या आस-पास कोई बडा समुद्र है? बुरा न मानें, मैं इसलिए पूछ रहा हूँ कि मुझे समुद्र के किनारे घूमने का बड़ा शौक है, बाई द वे..... आपकी क्या हॉबीज है?

विस्तार से लिखियेगा। इस बीच आपने कोई नया व्यंग्य लिखा हो तो जरूर प्रकाशक के लिए भेज दीजियेगा। आपका अपना ही संपादक।"[110]

"प्यारे रेल मंत्री अब्दुल गनी खान जी,

अशसलाम वाले कुम,

आँखों के तारे, अपने इलाके में प्यारे, जरा से न्यारे गनीखानजी, आपकी महिमा का समाचार पढ़कर दिल गद्‌गद्‌ हो गया।

आपकी बात सच है कि पैसा बैंक वालों के बाप का नहीं होता। इतनी-सी-बात बैंक वालों की समझ में क्यों नहीं आयी? हर बेटे को यह अधिकार है कि वह अपने इस बाप को मुफ़्त में प्राप्त करें। बेटे को बाप से छीनने का भला बैंकवालों को क्या हक?"[111]

"हमारे प्राणनाथ,

हम तो 'मेरे मिट्‌ठू' लिखना चाहते थे पर हमारी सहेली नाराज हो गयी। बोली - देख, जैसे रोगी का प्राणनाथ डॉक्टर-वैद्य होता है, राहगीर का प्राणनाथ ट्रक-ड्राइवर होता है और रेल यात्रियों का प्राणनाथ रेलमंत्री होता है वैसे ही हर भारतीय स्त्री का प्राणनाथ उसका पति होता है। चाहे तो मारे या जिन्दा रखे। सभी अपने पति को प्रणनाथ लिखती हैं, चाहे वो बचपन से अनाथ क्यों न हो तू भी प्राणनाथ लिख।"[112]

"जो तुमसे भ्रष्टाचार से धृणा करता है वह दु:खी रहता है। तुम्हारी शरण में जो आ जाता है वह मालामाल हो जाता है। वह आलीशान कोठी बनवा लेता है।

बच्चों को विलायत पढ़ने भेज देता है। टैरेलिन की कमीज़ पहनता हैं। फर्स्ट-क्लास में सफर करता है। चमचमाती कार में घूमता है और इसी कारण से तुम लोकप्रिय हो।"[113]

यहाँ भ्रष्टाचार करने के फायदें को पत्र शैली द्वारा व्यंजित किया गया है।

"प्रिय मित्र,

मुझे इस बात का गहरा दु:ख है कि आजकल भी तुम्हें लिखने का कष्ट उठाना पड़ रहा है, आजकल जबकि बिना लिखे भी साहित्यकार में चमकने वाले अनेक सितारे उग आये हैं। तुम तो जनते ही हो, जो मजदूर सबसे अधिक कुदाली चलाता है उससे अधिक चर्चा उसकी होती है जो कुदाली चलाने वालों का लेखा-जोखा रखता है अथवा उनके साथ फोटो खिंचवाता है। सोचता हूँ, यदि तुमने भी बजाय लिखने के लिखने वालों की चर्चा करने वालों इन साहित्य-गोष्ठियों में भाग लिया होता तो आज समूचे हिन्दी जगत पर उसी तरह छा गये होते जैसे बिना फल व फूल की बेग समूचे वृक्ष पर छा जाती है।"[114]

यहाँ साहित्यिक विसंगति को पत्र शैली के माध्यम से उजागर किया गया है।

"भैया आलोचक,

मेरा यह पत्र पाकर तुम चौंकना नहीं। बहुत सोच समझ कर ही तुम्हें यह पत्र लिखने बैठा हूँ। मैंने बहुत दिनों तक तुम्हारी अवहेलना की। बदले में तुमने मेरी, मुझसे भी ज्यादा, अवहेलना की। इस प्रकार अनजाने ही एक 'घनघोर साहित्यिक शीत युद्ध शुरू हो गया। पता नहीं इसका अंत क्या और कहाँ होगा?"[115]

"सुना है आप शहर में कुछ उद्घाटन हेतु आ रहे हैं। आपको जानकर खुशी होगी की मैंने शहर में व्यायामशाला खोली है। जिससे आने वाले चुनावों को देखते हुए नये दाँवपेचों के साथ बड़े पहलवान पैदा किये जायेंगे। कृपया मेरी व्यायामशाला भी लगे हाथ उद्घाटन करें पार्टी का चंदा तो मैं एड़वांस मैं दे चुका हूँ।

आप मेरा ध्यान रखें मेरा ध्यान आपकी ओर है।

शेष ठीक ही समझो।

आप के दासों का दास।"[116]

यहाँ पत्र शैली द्वारा राजनीतिक दावपेच को व्यंजित किया गया है।

पत्र शैली के कुछ अन्य उदाहरण :

'सरल हिन्दी के पक्ष में एक खुला पत्र'[117], 'ऐक्ट्रेस की डाक'[118], 'चलने से पहले कुछ हिदायते', 'पिरथी भगत ने जब एक दिन खुश होकर छोटे लाट साहब को चिठ्ठी लिखी'[119], 'अ-लेखन की नयी विधा की जनक-गोष्ठी', 'एक बिना लिखा खत'[120], 'दो पत्र'[121], 'सम्पादक के नाम आधा दर्जन पत्र'[122] जैसे निबंधों को इस दृष्टि से देखा जा सकता है।

व्यंग्य की भाषा के कथ्य के अनुरूप पत्र शैली का प्रयोग किया गया है। व्यंग्यकारों ने पत्र शैली के माध्यम से पात्र की विशेषता तथा परिवेशगत विसंगतियों पर व्यंग्य प्रहार करने का प्रयास किया है।

8) भाषण शैली

व्यंग्यकारों ने व्यंग्य निबंध के विषय को व्यंजित करने के लिए भाषण शैली का प्रयोग किया है। पात्र द्वारा किये गये भाषण विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार करने के लिए एक सशक्त माध्यम बन सका है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है -

जब देश में कोई महापुरूष की मृत्यु होती है तब वक्ता उसके अनेक गुणों को याद करता हैं। इसको भाषण शैली द्वारा यहाँ व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। यथा-

"मैं आपका अधिक समय नहीं लूंगा, क्योंकि मेरे बाद भी अनेक वक्ता बोलने वाले हैं, पर अन्त में मैं इतना अवश्य कहूँगा कि आज हम जो भी है, पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से देश का जो भी रूप बन रहा है, पर आज नहीं तो कल देशों को जरूर 'ड' के विचारों की और लौटना पड़ेगा। क्योंकि 'ड' का मार्ग ही एक ऐसा मार्ग है, जिसमें यह देश (या साहित्य) उन्नति कर सकता है।"[123]

शिक्षा संस्थान में हो रहे नैतिक पतन को भाषण शैली द्वारा इस प्रकार व्यंग्य किया गया है। जैसे -

"भूतपूर्व उपकुलपतिजी तथा अभूतपूर्व छात्रों,

आज का दिन हम सभी के लिए गौरव का दिन है। आज मात्र आपकी दीक्षा ही समाप्त नहीं हो रही है वरन् कल से यह शिक्षा संस्थान भी बन्द होने जा रहा है। आज का समारोह सच्चे अर्थों में दीक्षान्त समारोह है। वैसे भी

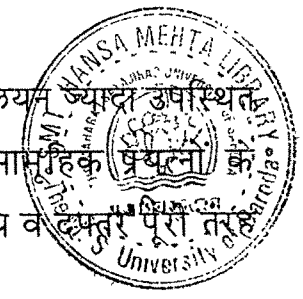

पीछले कई वर्षों से इस संस्थान में छात्र कम और पुलिस-बटॅलियन ज्यादा उपस्थित रहे हैं जो कि एक सन्तोष का विषय है। आप लोगों के सामूहिक प्रयत्नों के फलस्वरूप इस संस्थान का फर्नीचर, रसायनशाला, पुस्तकालय व दफ्तर पूरी तरह जला दिये गये हैं जिसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।"[124]

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The Maharaja Sayajirao University of Baroda

"इनके बाद रिश्वतभाई ने जीवन में रिश्वत की उपयोगिता और औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'यदि रिश्वत देकर ही काम निकलता है, तो उसमें बुरा क्या है? इस रिश्वत का उदय संसार में मानव सभ्यका के साथ हुआ। रिश्वत के बिना तो भगवान भी प्रसन्न नहीं होता। रिश्वत का उद्‌गम तो वेदों में भी देखा जा सकता है।"[125]

उक्त उदाहरण में रिश्वत के फायदों को व्यंजित किया गया है।

"भाइयों,

अभी मैं आपके सामने बिलकुल रोता-कलपता आया हूँ! सच पूछिये तो पिछले सप्ताह से मैं लगातार रोता-कलपता आ रहा हूँ। के. बी. का निधन मेरे लिये एक आघात है। आघात से भी बढ़कर वज्रघाट कहिये।.....

..... के. बी. ने इस विद्यालय में एक शानदार परम्परा कायम की है। वे मैट्रिक में सात बार फेल हुये, आई. ए. में पाँच बार और बी. ए. में तीन बार। इस प्रकार उन्होंने अपने को निरन्तर माँजा और निखारा। उनकी प्रगति स्पष्ट थी।"[126]

विद्यार्थी के. बी. की अचानक मृत्यु पर शोक सभा रखी है। उसके विद्यार्थी जीवन पर भाषण शैली द्वारा व्यंग्यात्मक रूप से प्रकाश डाला है।

"बहनों और भाइयों!

मैं आपका हृदय से आभारी हूँ जो आपने मुझे मेरी विराट मुर्खता से आगाह किया। मेरी मूर्खता अब एक व्यक्ति की मूर्खता नहीं है। यह आप सबकी मूर्खता का एक समन्वित रूप है। आपको विदित है कि संसार में अनेक धर्मो पर बल दिया गया है, मगर मेरी दृष्टि में मुर्खता मनुष्य का एक ऐसा जन्मजात गुण एवं धर्म है, जिसका निर्वाह वह आजीवन करता है। मेरा दृढ विश्वास है कि मुर्खता के दुराव प्रदर्शन का दूसरा नाम ही मानव जीवन है।"[127]

भाषण शैली के अन्य उदाहरण :

'बर्नार्ड शो का भाषण', 'भाषण जोकर सम्मेलन का' (शंकर पुणताम्बेकर); 'सत्ता के पीछे दौड़ने वाले ये हाईब्रीड शिक्षक', 'भारत की समाजवादी अर्थनीति

पर डॉ. भाणजीभाई के विचार', 'अमृत पुत्र', 'कितने शामियानों मे कितनी बार', 'अतंकवादियों के चंगुल में' (सुदर्शन मजीठिया); 'महाविद्यालय का उद्घाटन समारोह' (रामनारायण उपाध्याय) जैसे निबंधों में भाषण शैली का प्रयोग दृष्टिगत होता है।

9) आलोचनात्मक शैली

आलोचनात्मक शैली में किसी वस्तु घटना, कृति या पात्र की सम्यक् व्याख्या या उसका मूल्यांकन आदि करना होता है। यह शैली बौद्धिक एवं वैचारिक धरातल पर आधारित होती है जिसमें विश्लेषण द्वारा खण्डन-मण्डन की भाषिक प्रक्रिया को अनेक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है। व्यंग्य निबंध भी विशेषत: बैद्धिक एवं वैचारिक धरातल पर आधारित होता है। जिसमें विसंगतियों की तीखी और प्रहारात्मक आलोचना की जाती है। व्यंग्य निबंध में इस शैली का प्रयोग मिलता है। इसके कुछ उदाहरण -

शरद जोशी ने 'मेघदूत की पुस्तक समीक्षा' में आलोचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। जैसे -

"उज्जयिनी-निवासी कालिदास नामी कवि रचित काव्य 'मेघदूत' की प्रति देखने को मिली है। छोटी-सी पुस्तक है। काव्य में एक विरही यक्ष ने मेघ को अपनी विरह की पीड़ा सुनाई है और उसे दूत बना निवेदन किया है कि अलकापुरी में प्रियतमा को सन्देश दो, यात्रा-हेतु मेघ को विस्तार पूर्वक निर्देश भी दिया है। हमें तो सम्पूर्ण रचना हास्यास्पद ही लगी। विरही द्वारा पक्षी, वायु आदि से सन्देश भिजवाने की बात को सुनी है एवं कविता की परम्परा के अनुसार है पर मेघ से सन्देश भिजवाने की सूझ विचित्र है। ..... वही घिंसी-पिटी प्रेम की बातें, जो बीसियों बार कही जा चुकी हैं। यों काव्य ठिक है तथा कहीं-कहीं वास्तव में सुन्दर बन पड़ा है उपमाओं का बाहुल्य खटकता है। मूल्य अधिक है चार दमड़ी।"[128]

"[अ] 'ऋतुसंहार' अभी तक अप्रमाणिक पुस्तक है। उसके आधार पर कालिदास को बंगदेशी स्वीकार करना ठीक नहीं। वैसे 'निराला' ने भी बंगाल के वसन्त की महिमा गायी है पर चूँकि उन्होंने भी महिषादल की महिषी का दुग्धापान किया था, उनकी वाणी को भी निष्पक्ष स्वीकार नहीं किया जा सकता।"[129]

"आजादी से पहले जेल के साथ नेताओं और महापुरूषों के भावात्मक व

आध्यात्मिक संस्करण जुड़े होते थे। महापुरूषों का महत्त्व इस लिए बढ़ा कि ये महापुरूष व नेता जेल गये थे अथवा भेजे गये थे। इन नेताओं ने अपनी महानता के भुजिए जेल की कढ़ाई में तले थे, परिणाम यह हुआ कि इन महापुरूषों के जेल जाने के पश्चात हर छोटे मोटे लीड़र के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह अपने साथ किसी रूप में जेल का सम्बन्ध जोड़े। यदि वह जेल नहीं गया तो अपने बाप को जेल भेजे। स्वतंत्रता के बाद इन जेल जाने वाले नेताओं की पीढ़ी समाप्त हो रही है। अब उनके पुत्र रत्नों का राज है। इन 'यंग शासको' के बाप या काका जेल गये थे। अपने बुजुर्गों की जेल जाने की पूंजी पर ये, नए सींड़ ड़कार मारकर तथा जनता को भेड़ बनाकर उनका उन बराबर तराशते रहते है।"[130]

यहाँ आलोचनात्मक शैली द्वारा नेताओं की जेल जाने की प्रवृत्ति को अभिव्यंजित किया गया है।

"हमारी शिक्षा-संस्थाओं में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। कहते हैं कि हिन्दी के शब्द तैयार नहीं है, पढ़ायें कैसे? इन अक्ल के दुश्मनों से हम पूछते है कि क्या वे इतने ही बड़े अपनी माँ के पेट से उपजे थे? क्या अंग्रेजी आरम्भ से ही इतनी विकसित रही है? तैरना सीखकर पानी में प्रवेश होता है? बच्चा एकदम तो दौड़ने नहीं लगता, लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि उसे चलना ही न सिखाया जाये। केवल इसलिए कि वह गिर पड़ेगा। गरज यह कि अब अहिन्दी- भाषी भारतीय हिन्दी भाषियों की और देखता है तो बड़बड़ाता है कि खुद तो अंग्रेजी की गोद में सोये पड़े हैं और हमको हिन्दी-हिन्दी चिल्लाकर मूर्ख बनाते है।"[131]

हिन्दी को तुच्छ मान कर अंग्रेजी भाषा को प्राधान्य देने वालों की यहाँ आलोचना की गयी है।

आलोचनात्मक शैली में अन्य उदाहरण :

'एक व्यंग्ययात्रा की समीक्षा-रंग में प्रकाशित', 'दी लव बुक: एक रिव्यू' (शंकर पुणताम्बेकर); 'सुर-अ-सु-बेसुर', 'कुत्ते', 'एकस्ट्रा कमाई', 'कब्र खोदने की साइंस', 'समाज शिक्षा और संस्कार', (सुदर्शन मजीठिया); 'हास्य कवि कुंजबिहारी पाण्डेय' (बरसानेलाल चतुर्वेदी) आदि व्यंग्य निबंधों में आलोचनात्मक शैली मिलती है।

10) इन्टरव्यू शैली

इन्टरव्यू शैली साक्षात्कार प्रणाली का ही रूप है। जहाँ पात्र प्रश्न करे और दूसरा उसका उत्तर दे। इस प्रकार के वार्तालाप के माध्यम से साहित्यकार अपने कथ्य तक पहुँचने का प्रयत्न करता है। हिन्दी व्यंग्य निबंध साहित्य में कई व्यंग्यकारों ने इस शैली का प्रयोग किया है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है। जैसे-

"आपने थीसिस स्वयं लिखा था?"

"जी नहीं। टाइप करवाया था।"

"ओह - हो। टाइप तो करवाया था। पर टाइप करवाने से पहले लिखा भी तो होगा। किसने लिखा था?" एक्सपर्ट हलका सा खीझ गए।

"जी। मैंने लिखा था।"

"तो आप पी-एच. डी. अपने काम से हुए या मेरी दया से?"

"जी। एक्कै बात है। दोनों में फरक ही क्या है।" [132]

यहाँ पी-एच. डी. किये हुए सज्जन से युनिवर्सिटी के एक्स्पर्ट इन्टव्यू ले रहे है। इनकी बातचीत मे शिक्षा जगत में व्याप्त विसंगतियों को उजागर किया गया है।

-"लेखकों के आज अलग-अलग कैंप हैं उसके बारे में आपकी क्या राय है?"

अच्छी ही राय है। इससे अलग-अलग कैंप वालों का साहित्य पढ़ने में जितना मजा नहीं आता, उतना एक-दूसरें पर कीचड़ उछालते देखकर आता है। इससे लेखकों के व्यक्तित्त्व सामने आते हैं जो उनके कृतित्व से ज्यादा आनंद उपजाते हैं।

- क्या साहित्यकार की अलग से प्रेयसी होना आप आवश्यक मानते हैं?

इस सवाल का सही जवाव तो मैं तब दे सकूँगा जब सत्तरी को पहुँचूँ, क्योंकि तब शायद मेरे विचारों की परिपक्वता अधिक हो या मुझे घर की औरत से कोई डर भी न रहे।"[133]

यहाँ इन्टरव्यू शैली द्वारा साहित्यिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों को व्यंजित किया गया है।

"प्रश्न - मैडम, आपको रहते हुए 40 अरब का बैंक घोटाला हो गया? कुछ प्रकाश डालेगी?

"उत्तर - देखिए, मेरा पी. ए. कुछ ज्यादा ही 'पापुलर' हो गया है। किसी

शायर ने मज़ाक में लिखा था कि 'एक ढूँढो हजार मिलते हैं।" ईश्वर की कृपा से अपनी जनसंख्या तो 'राजधानी एक्सप्रैस' की गति से बढ़ रही है, तो मेरे वाहनों की संख्या भी बढ़ रही है। मेरे वाहनों में जो शीर्षस्थ स्थान पर पहुँच गए है ये उन्हीं का सम्मिलित प्रयास है। 'अफसर नेता व्यापारी हार गयी इन से मक्कारी।"[134]

यहाँ भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया गया है।

"मैं : अच्छा यह बताइए, ईंट खाने के बाद आप स्वयं को कैसा अनुभव करते हैं?

वे : एक महान देशभक्त!

मैं : वह कैसे?

वे : क्योंकि खाद्य - समस्या एकमात्र व्यावहारिक समाधान मैंने ही प्रस्तुत किया है। साथ ही मैंने जनता के सामने त्याग एवं बलिदान का आदर्श रक्खा है।"[135]

- आप के देश में कौन सा तंत्र चलता है?

- जैसा अवसर हुआ। सर्वमान्य तो मूर्खतन्त्र है।

- आपके झण्डे का आधार क्या है?

- हमारा आधार है डण्डा, सम्राट ही नहीं जनता भी इसे बहुत प्यार करती है। इसी से तंत्र और लोक को चलाया जाता है।"[136]

"प्रश्न - आपके चुनाव में ये बड़े बड़े पोस्टर , ट्रक तथा गाडियाँ इस्तेमाल में लाई जा रही हैं, क्या बतलाइऐगा इनका आर्थिक पक्ष कौन देख रहा है?

उत्तर - हालाँकि आपका सवाल काबिले-गौर नहीं हैं, नहीं इसका जवाब देने की मैं कोई खास जरूरत महसूस करता हूँ फिर भी आपकी जानकारी के लिए इतना बतला देना जरूरी समझता हूँ कि न तो हमें अमरीका से पैसा प्राप्य हो रहा है और नहीं रूस से। हमारे साधन पूर्णत: स्वदेशी हैं। क्या आपने किसी राजनीतिक नेता से ऐसा सवाल कभी किया है? नहीं किया न? क्योंकि आप जानते हैं कि राजनीति में सब कुछ चलता है। अगर शिक्षानीति में भी यह सब चलने लगा है तो आपको एतराज क्या है?"[137]

"* आपके प्रदेश में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ रहा है?

* हाँ? बेशक बढ़ रहा है।

* आप इसे कैसे रोकेंगे?

* कौन माई का लाल रोक पाया है इसे?

* आपकी बात कर रहा हूँ।

* मैं किसी माई का लाल नहीं हूँ।

* तो समझूँ कि आप टेस्ट टयूब बेबी हैं?

* आप को जो समझ में आए, वह आप समझ लीजिए।

* चुनाव में कितना पैसा खर्च किया।

* आलाकमान को पता है।

* आपकी भावी योजनाएँ?

* आलाकमान जाने।"[138]

यहाँ राजनीतिक पार्टी के आलाकमान के रबर स्टेम्प जैसे नेता का इन्टरव्यू लिया गया है। जिसके द्वारा राजनीतिक दावपेच पर व्यंग्य किया गया है।

"मैंने पूछा, "चुनाव में आपकी जो हार हुई है, उसके क्या कारण है? उसे आप कहाँ तक अपनी नीतियों की हार समझते हैं?

वे थोडी देर सोचते रहे। फिर बोले "देखिये, यह नीतियों की हार नहीं हो सकती, क्योंकि मेरी कोई नीति ही नहीं थी।"

उन्होंने जल्दी से जोड़ा, "पर यह प्रेस के लिए नहीं है।"

मुझे समझाते हुए उन्होंने कहा, "वैसे अपने को हारा हुआ कहने के बजाय यह कहने में ज्यादा सुन्दता है कि यह मेरी नहीं, नीतियों की हार है। इससे हार का कलंक अपने ऊपर से हट जाता है।"[139]

यहाँ इन्टव्यू शैली द्वारा हारे हुए नेता की मानसिकता को व्यंजित किया गया है।

इन्टव्यू शैली के अन्य उदाहरण

'नया व्यवसाय' (नरेन्द्र कोहली); 'कविवर बिहारी का इन्टव्यू (शंकर पुणताम्बेकर); 'इन से मीलिए', 'देश के लिए', 'असफलता की सफलता', 'हे-मा-मालिनी के बाप से एक मुलाकात', 'कविवर बांके बिहारी जी' (सुदर्शन मजीठिया); 'विकलांग लोकतन्त्र से भेंटवार्ता', 'उल्लूजी और प्रतिभूति घोटाला (बरसानेलाल चतुर्वेदी); 'मेरा क्रिकेट प्रेम' (सूर्यबाला); 'वह अजीब प्रेस रिपोर्टर' (रामनारायण उपाध्याय) आदि इसी प्रकार के व्यंग्य निबंध है।

II) तुलनात्मक शैली

दो वस्तुओं के गुण-दोष की समानता तथा असमानता को प्रस्तुत करने लिए तुलनात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है। व्यंग्य निबंधों में भी दो वस्तु, व्यक्ति तथा प्रवृत्तियों की तुलना की जाती है। व्यंग्यकार एक वस्तु या व्यक्ति के गुण-दोष का दूसरें के गुण-दोष के साथ तुलना करके व्यंग्यात्मक प्रहार करता है। इस शैली के कुछ उदाहरण दृष्टव्य है-

हमारे देश की दूसरे देश के पास आर्थिक सहायता माँगने की वृत्ति की तुलना बसस्टैंन्ड के भिखारी के साथ की है। जैसे -

"उस, दिन पता नहीं कैसे, अख़बार में भारत को 'प्रदत्त' आर्थिक सहायता की खुशखबर शैली में लिखित समाचार को पढ़ते हुए मेरा ध्यान बसस्टैंड के उस भिखारी की ओर चला गया। वह उसी उत्साह और कर्तव्यनिष्ठा से एक नयी आयी बस के सामने भीख माँग रहा था। जिस उत्साह से आजादी के इनते वर्ष बीतने के बाद हमारा देश आर्थिक सहायता माँगा करता है।"[140]

"जिस तरह की आबोहवा में तुम्हें रखा जाता है। तुम्हारी तुनकमिजाजी का ख़्याल रखते हुए, बिलकुल इसी तरह की आबोहवा में ब्यूरोक्रेट को रखा जाता है। तुम भारी कीमत के हो, यह भी ऐसा ही कीमती है। तुम फारेनमेक के हो, यह भी फारेन मेक का है। तुम मशीन हो, यह भी मशीन है। तुम्हें जिस तरह का फीडिंग किया जाता है, उसी तरह इसका भी तुम फीडिंग से इधर-उधर नहीं जा सकते- फीडिंग तुम्हारी च्वाइश नहीं है, यही स्थिति इस ब्यूरोक्रेट की है।

फर्क बस यही है कि तुम्हारी तटस्थता मशीनी है, इनकी तटस्थता पथरीली है। इसीलिए हे काम्प्यूटर, हमें तुम अधिक अपने लगते हो बनिस्पत इन पत्थरों के।"[141]

यहाँ हृदयहीन ब्यूरोक्रेसी की कम्प्यूटर से तुलना की है।

"बंदर हँसते नहीं और पेड़ों पर रहना पसंद करते हैं जबकि आदमी एक दूसरे पर हँसता है और पेड़ों के नीचे रहना पसंद करता है। बंदर तो अपनी ही कुदरती पोशाक में रहना पसंद करते हैं जबकि आदमी शरीर-रूपी वस्त्र पर वस्त्र पहनता रहता है।"[142]

यहाँ आदमी और बंदर के बीच व्यंग्योक्तिपूर्ण तुलना की है।

"ढोर तो चौपाये होते हैं, जबकि अफसर दुपाया होता है। चौपायों की बुद्धि

और पेट लाइन में होता है जबकि अफसर की बुद्धि पेट के ऊपर होती है। पर उन अफसरों को क्या कहा जाये जिनकी बुद्धि उनके पेट के परिचालित होती है।"[143]

"टिकट के लिए पुरूषों की वह वक्र रेखा वैसी ही प्रतीत होती थी जैसे चीनी के लिए चींटियों की। अंतर केवल इतना था कि चींटियाँ स्वअनुशासित, विनयशील एवं शांत होती है जबकि ये मानव सिपाहियों द्वारा अनुशासित, अविनयशील एवं 'कौन है?' 'आगे सरको', 'बीच में कौन घुस आया' आदि उच्च स्वरों के साथ परस्पर धक्कों के सहारे अग्रसर होने वाले 'कौन श्रेष्ठ' है।"[144]

यहाँ मनुष्य की तुलना चींटी के साथ की गयी है।

"तब के ब्राह्मण वेद-पाठ किया करते थे अब के ब्राह्मण सिनेमा की तर्ज पर कीर्तन करते हैं तब के क्षत्रिय धरती पर खड़े होकर शेर का शिकार किया करते थे और अब के क्षत्रिय चूहे मारने के लिए पुड़िया रखते हैं। तब बनिये राजा को भरपूर धन दिया करते थे और आज के बनिये इन्कम टैक्स चुराते है।"[145]

"साला एक हलकी चीज है जबकि दामाद वजनदार होता है। नेता के साले के पास सभी की पहुँच हो सकती है जबकि नेता दामाद के पास कुछ लोग ही पहुँच सकते हैं। नेता का साला आधा नेता होता है जब कि दामाद चौथाई नेता ही होता है। नेता का साला पट तो आसानी से जाता है पर उसके पटने का उतना वजन नहीं होता उसकी तुलना में दामाद आसानी से हत्थे नहीं चढ़ता लेकिन जो चढ़ा लेते हैं उनका काम आनन-फानन में हो जाता है।"[146]

"बाल बहुधा समान ऊँचाई पर टकराती है। यह अलग बात है कि टकराकर वह ऊपर उछले या नीचे गिरे। किंतु फाइल आवक बाबू से रवाना होकर, ऊपर और ऊपर तक चलती जाती है, निर्णय हो जाने पर नीचे और नीचे चलती हुई, जाबक बाबू के हाथों से निकलती हुई अपनी यात्रा पूरी करती है। टेबिल टेनिस के खेल में पाँच या तीन खेलों मे सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी या खिलाड़ी की जोड़ी का आकलन होता है। बेस्ट आफ थ्री। या बेस्ट आफ फाइव। कार्यालयनीन खेल में बेस्ट आफ वन, याने एक बार में ही अनुकूल या प्रतिकूल निर्णय हो जाता है।"[147]

सरकारी कार्यालय में फाइल किस प्रकार एक अफसर से दूसरे अफसर तक जाती है उसकी तुलना टेबिल टेनिस के बोल के साथ की है।

"बरसात के मौसम में मेंढ़क टर्र-टर्र करते हैं। ठीक वैसे ही चुनाव के

मौसम में नेताओं की आवाजों का शोर गली के नुक्कड़ों से सुनाई देता है। बरसात के पानी से घर की दीवालें खराब हो जाती हैं। ठीक चुनाव के मौसम में भी पोस्टरों और चुनावी नारों से दीवालें खराब हो जाती हैं।"[148]

यहाँ चुनाव तथा बरसाद के मौसम के बीच तुलनात्मक व्यंग्य प्रस्तुत किया गया है।

तुलनात्मक शैली के अन्य उदाहरण :

'पान के बाहने कविता और कर्म पर एक बहस' (शरद जोशी); 'नेता के नाम दौड़ो और प्रजा के नाम सो जाओ', 'भारतीय संस्कृति में जेलों का महत्व', 'एक और अनेक', 'यति और पति का भ्रम', 'लार्ड और लैंड', 'कॉलेज बनाम कारखाना' (सुदर्शन मजीठिया); 'बड़ों के पदचिन्ह' (रामनारायण उपाध्याय); 'होली बनाम राजनीति', 'टेबिल टेनिस की बोल और कार्यालय की फाइल', 'दूल्हा और मंत्री: तुलनात्मक अध्ययन', 'टोप पहन लेने पर' (हरि जोशी) आदि तुलनात्मक शैली के व्यंग्य निबंध है।

12) विरोधाभासपरक शैली

दो वस्तुओं या व्यक्तियों के बीच विरोध दिखा कर विसंगतियों को यर्थाथ के धरातल पर प्रहारात्मक रूप में व्यंजित किया जा सकता है। वस्तुत: व्यंग्य में कटुता एवं तीव्रता लाने के लिए विरोधाभासपरक शैली का प्रयोग हुआ है। इसके कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं -

"अफसर को साहित्य कला से बड़ा प्रेम। कविता घर में पानी भरे। आलोचना रोज झाड़ू लगाये। चिन्तन उनके कपड़े धोये। लेख बिछायें। किताबों पर बैठें। कहानी जूतों के पास पड़ी रहें। अफसरी भी करें और साहित्य भी करें।"[149]

सरकारी अफसर को कितना साहित्य प्रेम है। इसी बात को विरोधाभासपरक शैली में व्यंजित किया गया है।

"पुरूष भी गर्भ धारण करके मैटरनिटी लीव का सुख भोग सकेगें।"[150]

स्त्री गर्भ धारण करके मैटरनिटी लीव ले सकती है। किन्तु यहाँ पुरूष को मैटरनिटी लीव लेना विरोधाभाष है। इसके द्वारा अधिक छुट्टीओं का सुख भोगनेवाले पुरूषों पर व्यंग्य प्रहार किया गया है।

"यदि धर्मनिरपेक्ष देश में एक धर्म गोवध बंदी माँगता है दूसरा उसका वध

करने का भी अधिकार मांग सकता है।"[151]

यहाँ भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में दो विरोधी विचारधाराओं पर व्यंग्य किया है।

"हमारी राय में हम दूध और धी की तो नहीं मगर शराब की नदियाँ बहा सकते हैं हमें अपने मित्र देशों से चार पाँच शराब की नदियाँ बहाने के टेण्डर मँगवाने-चाहिए।"[152]

नदियाँ पानी की बहती है नहीं कि शराब की। शराब की नदियाँ बहाने से तात्पर्य है देश में अनधिकृत शराब की बिक्री होती है तथा भ्रष्टाचार फैल रहा है। इसी बात को यहाँ व्यंजित किया गया है।

"बिहारी का सारा सर निचोड़कर छात्र-छात्राओं को पिला देते हैं आध्यापक आलोचक न हुए ज्यूस निकालने की मशीन हों।"[153]

विरोधाभासपरक शैली द्वारा शैक्षणिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगति को उजागर किया गया है।

इस शैली के द्वारा दो वस्तु के बीच विरोध प्रकट करके विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है।

13) कथा शैली

व्यंग्यकारों ने लघुकथा के माध्यम से विषमताओं तथा विसंगतियों का प्रभावशाली चित्रण किया है। प्राय: इस शैली का प्रयोग कुछ व्यंग्यकारों ने व्यंग्य निबंधों में किया है। जैसे -

"दूसरे दिन बूढ़ा सियार अपने साथ तीन सियारों को लेकर आया उनमें से एक को उसने पीले रंग में रंग दिया था, दूसरे को नीले और तीसरे को हरे में।

भेड़िये ने देखा और पूछा - 'अरे ये कौन है?

बूढा सियार बोला, 'ये भी सियार हैं, सरकार, रंगे सियार हैं आपकी सेवा करेंगे आपके चुनाव का प्रचार करेंगे बूढ़े सियार ने भेड़िया का रूप भी बदला। मस्तक पर तिलक लगाया, गले में कंठी पहनाई और मुंह में घास के तिनके खोंसकर सन्तरूप बना लिया।"[154]

यहाँ कथा शैली द्वारा राजनीतिक दाव-पेच को व्यंजित किया गया है।

"एक बार एक मुगल बादशाह हुमायूँ नदी किनारे अपनी बेगम के साथ सैर

कर रहा था कि यकायक नदी में एक बहुत ही खूबसूरत कमल का फूल बहता दिखायी दिया। बादशाह ने इशारा किया तो बेगम ने उसे सूँघने इच्छा प्रकट की। किसी को पुकारने का समय न था। स्त्रि-हठ के सामने हुमायूँ ने एक क्षण में हार मानी और तुरन्त नदी में कूद पड़ा। कमल बहता-बहता धार की ओर मुड़ गया। बादशाह ने पीछा किया। किन्तु जल्दी ही थक गया। बेगम को आवाज देनी चाही तो मुँह में पानी भर गया । घभराहट में जो सन्तुलन बिगड़ा तो एक डुबकी भी लगा गये। ठीक उसी समय मशक भरते हुए दूसरे किनारे पर जुम्मन मियाँ कव्वाली गा रहे थे। उन्होंने जो एक अदद इन्सान को डूबते देखा तो कूद पड़े और दो-चार लम्बे हाथ मार हुमायूँ के नीचे मशक लगा दी।"[155]

किसी भी बात में जल्दबाजी करने तथा पत्नी का कहना फौरन मानने वाले लोगों पर कथा शैली द्वारा व्यंग्य किया गया है।

"उधर दानदाताजी की यह प्रवृत्ति, इधर शिष्टमंडल उनसे अपार धन राशि की आशा लेकर आया था। लालाजी सुनते रहे, सोच रहे थे चन्दा देने से कैसे बचा जाए? शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति आए हुए थे, वे जानेमाने रईस थे, गरीबी का बहाना भी नहीं बना सकते थे। बोले - देखए, मैने आज तक किसी को चन्दा नहीं दिया, मैं तो जो कुछ बन जाता है स्वयं ही गुप्त रूप से करता रहता हूँ, न मुझे अपना नाम कहीं छपवाना। खैर आप लोग आए हैं तो अन्दर आइए, और मेरी विधवा सास को ले जाइए। शिष्टमंडल पर जो उन्होंने लुहार की चोट मारी, सब लोग उन्हें देखते रह गए। लोग सौ सुनार की के रूप में अनुनयविनय कर रहे थे, वह सब बेकार हो गया।"[156]

चन्दा न देने की वृत्ति पर यहाँ व्यंग्य किया गया है।

"जब महीना होने को ही था कि एक दिन अचानक अकबर चौपाल पर जा पहूँचा। जाट पंडित तुरन्त हाथ जोड़ आगे बढ़ बोला, हजूर। आपका महाभारत लिखा गया हैं। वे राजा थे; आप महाराजा हैं। उन्होंने सिर्फ एक लड़ाई लडी थी, आपने कई लड़ाईयाँ लडी और जीती हैं। पांडवों की रानी द्रौपदी थी, आपकी बेगम साहिबा है। द्रौपदी के पाँच पांडव पति थे। लेकिन बेगम साहिबा के एक पति आपको तो हम जानते हैं, मगर चार के नाम आपसे पूछकर लिखने हैं।.... बस!"

"नामाकूल कहीं के! मेरी बेगम और उसके चार और खाविन्द!" अकबर

चिल्लाया।"[157]

अकबर ने जाट पंडित से अपना महाभारत लिखने की जिद की। तब जाट पंडित ने इसे कथा शैली द्वारा व्यग्यात्मक रूप से अभिव्यंजित किया है।

कथा शैली के अन्य उदाहरण -

'स्मृति-चिन्हों का सदुपयोग' (शरद जोशी); 'एक मुदर्रिस की राम कहानी', 'मनि भूषक कथा: नया संस्करण' (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'कुत्ते और कुत्ते', 'यहाँ से वहाँ', (श्रीलाल शुक्ल); 'बच्चों की कहानी: एडल्ट एडीशन' (नरेन्द्र कोहली); 'कथा एक बाढ़ की', 'कथा दो ध्रुवों की' (शंकर पुणतांवेकर); 'श्रवणकुमार : 1989', 'सौ चोट सुनार की एक लुहार की' (बरसानेलाल चतुर्वेदी); 'परम आत्मा प्रिय भाभीजी', 'डाकसाब का लखनऊ सफरनामा' (मधुसूदन पाटिल); 'आतंकवाद पर छह कुत्ता कथाएँ' (ज्ञान चतुर्वेदी); 'कनछेदीलाल की फाइव स्टार यात्रा', 'कुत्ता और किटी-पार्टी' (जगतसिंह बिष्ट); 'बालिका वर्ष की एक कथा', 'रंगे हाथों पकडे गए' (गिरीश पंकज); 'अकबर ने महाभारत लिखवाया (भरतराम भट्ट) आदि कथा शैली के अन्य उदाहरण है।

अन्य शैली प्रयोग

हिन्दी के व्यंग्य निबंधकारों ने डायरी, संस्मरण, उपदेश, उपहासात्माक जैसी अनेक शैलियों का प्रयोग व्यंग्य को संप्रेषित करने के लिए किया है। जैसे -

डायरी शैली

'अधूरी डायरी' (लतीफ घोंघी); 'बावन पत्ते', 'भारतीय संस्कृति में जेलों का महत्त्व' (सुदर्शन मजीठिया); 'साहित्यिक डायरी के चार दिन' (शेरजंग गर्ग) आदि।

संस्मरण शैली

'मेरा बचपन', 'गांधी जयन्ती: एक संस्मरण', 'गर्दिश के दिन', 'नदिया किनारे हमारा गाँव', 'शिकार', 'एक उठाईगीर सिनेमा के संस्मरण'. 'मेरी पहाडी यात्राएँ' (रवीन्द्रनाथ त्यागी) आदि।

उपदेश शैली

'अपने पुत्र के नाम एक खुला पत्र' (रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'आधुनिकताओं के नाम' (श्रवणकुमार उर्मलिया) आदि।

उपहासात्मक शैली

'एक खबरदार लेख' (रवीन्द्रनाथ त्यागी)

लतीफा शैली

'अपनी अपनी व्यंग्य कथा', 'पाँच व्यंग्य चित्र असली', 'थ्री इन वन', 'तीन अस्पताल कथाएँ' (लतीफ घोंघी) आदि।

यात्रा शैली

'सफर डी. टी. सी. बस का', 'गांधी की खोज', 'सिन्दबाद और चार चतुरों की भारत यात्रा', 'सत्य कथा है?' (सुदर्शन मजीठिया) आदि।

वर्गीकरण शैली

'डिस्को कल्चर', 'गरीबी की रेखा', 'माखन महंगा पडेगा', 'गड्ढे खोदकर उन्हें भरने की कला', 'पिता पुकार हजामत', 'शिक्षा और संस्कार', 'गोंद और कैंची (सुदर्शन मजीठिया) आदि।

इसी प्रकार -

'मेरे राजदूत और शेर का शिकार' (उद्धरण शैली, रवीन्द्रनाथ त्यागी); 'हाज़िर-जवाबी' (चुटकुला शैली, आत्मानन्द मिश्र); 'एक टिकट का सवाल है बाबा', 'चोरी न होने का दु:ख' (विवरणात्मक शैली, लतीफ घोंघी); 'नया अंकगणित' (गणितीय शैली); 'एक परचा व्यंग्य बोध का' (प्रश्नपत्र शैली); 'प्रिये वह देखो बोस' (चमत्कृत शैली); ('शंकर पुणताम्बेकर); 'अथ अकर्मण्य-यज्ञ-उपदेशामृत' (उपदेशात्मक शैली, सूर्यबाला); 'मेरा निर्दलीय घोषणा-पत्र (घोषणा शैली, श्रवणकुमार उर्मलिया); 'जब मैं लिखता हूँ', 'मैं बड़ा आदमी हूँ' (आत्मा व्यंग्य शैली, डॉ आत्माराम) जैसे शैली प्रयोग व्यंग्य निबंधों में मिलते हैं।

अत: स्पष्ट है कि - समकालीन विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का यर्थाथ चित्रण करने तथा शिल्प-कौशल को अभिव्यक्त करने के लिए व्यंग्यकारों ने विविध शैलियों का प्रयोग किया है। इस प्रकार के प्रयोगों से आज के व्यंग्य निबंधों की भाषा का रूप बौद्धिक एवं विश्लेषण प्रधान हो गया है।

इन्टव्यू, पत्र, प्रश्न, भाषण आदि नई-नई शैलियों का प्रयोग व्यंग्यकारों ने अपने व्यंग्य निबंध में करते हुए व्यंग्य की शैली को वैविध्यमूलक विस्तार दिया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-42, 'घास पर खेलते अल्सेशियन'
2) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-379, 'एक जरूरी बयान'
3) वही, पृ-272, 'विविध प्रसंग'
4) लतीफ घोंघी, व्यंग्य की जुगलबंदी, पृ-145, 'अस्पताल'
5) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-73, 'डेग शो'
6) शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली, पृ-109, 'मंच'
7) सुदर्शन मजीठिया, मुख्यमंत्री का डंडा
8) रोशनलाल सुरीरवाला, भिश्ती और भस्मासुर, पृ-42
9) प्रेम जनमेजय, मैं नहीं माखन खायो, पृ-13, 'आह दिल्ली! वाह दिल्ली'
10) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मुलाकात मुफ़्तखोरो से, पृ-42, 'हे प्रिय नेतागण!'
11) बरसानेलाल चतुर्वेदी, 'द' से दलाल, पृ-40, 'माइक-महात्म्य'
12) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-132, 'दो शब्द: पड़ोसियों के कुत्तों पर'
13) श्यामसुन्दर घोष, खिन खारा, खिन मीठा, पृ-30, 'भाषण'
14) वही, पृ-83, प्राचार्य-पुराण
15) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-96, 'ससुराल का कमाल'
16) भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो, पृ-19, 'गुरूघंटाल बनो!'
17) आत्माराम, जब मैं लिखता हूँ, पृ-20, 'फाइलों का संसार'
18) रवीन्द्रनाथ त्यागी, शोकसभा, पृ-14, 58

19) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-51, 269, 292
20) संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-9, 24
21) शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली, पृ-81, 144
22) बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की डायरी, पृ-103
23) बरसानेलाल चतुर्वेदी, 'द' से दलाल, पृ-39, 58
24) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-184
25) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-17
26) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-91, 96, 109, 115
27) हरि जोशी, भेड़ की नियति, पृ-13, 36
28) जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ- 78
29) भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो !, पृ-17, 33, 56
30) निरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-17, 83
31) आत्माराम, जब में लिखता हूँ, पृ-20, 23
32) श्रीलाल शुक्ल, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-92, 'मनीषीजी की एक रात'
33) आत्मानन्द मिश्र, बे बात की बात, पृ-39, 'अस्पताल-लोक'
34) लतीफ घोंघी, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, पृ-111, 'जूते का दर्द'
35) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंव्य रचनाएँ, पृ-131, 'भगवान की औकात'
36) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-34, 'राजा हरिश्चन्द्र के आँसू'
37) रोशनलाल सुरीरवाला, पत्नी शरणम् गच्छामि, पृ-97
38) बरसानेलाल चतुर्वेदी, मिस्टर चोखेलाल, पृ-88
39) बालेन्दु शेखर तिवारी, किराएदार साक्षात्कार, पृ-55
40) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-57, 'चली रे चली रे अडतालीस डाउन'
41) के.पी. सक्सेना, मूँछ-मूँछ की बात, पृ-100, 101, 'कृपया परे हटिए !...मैं मछली हूँ !'
42) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-111, 'कमल की खोज में'
43) ज्ञान चतुर्वेदी, दंगे में मुर्गा, पृ-24, 25, 'चरखे की खोज'
44) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-76, 'मातृभाषा वनाम पितृभाषा'
45) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-112, संस्कारों का शुद्धिकरण
46) गोपाल चतुर्वेदी, खंभों के खेल, पृ-19, 'रावण न होने का संत्रास'

47) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ-26, 'अफसर की कार में सवार 'टीपू' को सलाम

48) शरद जोशी, यथाशंभव, 46, 282, 378

49) लतीफ घोंघी, मेरा मुख्य अतिथि हो जाना, पृ-49, 106

50) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें, पृ-98

51) नरेन्द्र कोहली, जगाने का अपराध, पृ-1

52) नरेन्द्र कोहली, आत्मा की पवित्रता, पृ-7, 27, 29

53) के.पी. सक्सेना, मूँछ मूँछ की बात, पृ-12, 30, 35, 61, 66, 100.

54) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-11, 73

55) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-107, 114

56) गोपाल चतुर्वेदी, खंभो के खेल, पृ-17, 20, 45

57) हिन्दी शब्द सागर, भाग-3, पृ-2208

58) संपा. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, पृ-471

59) हरिशंकर परसाई, पगडण्डियों का जमाना, पृ-89,

60) शरद जोशी, यथासंभव

61) शरद जोशी, जीप पर सवार इल्लियां, पृ-33

62) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-37, 'भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिय पृष्ठ'

63) श्रीलाल शुक्ल, अंगद का पाँव, पृ-86

64) सुदर्शन मजीठिया, इंडीकेट बनाम सिंडीकेट, पृ-94, 'एक गधे का साँड के नाम अन्तिम पत्र'

65) हरि जोशी, भेड़ की नियति, पृ-43, हर साल बढ़ रही है रावण की ऊँचाई

66) संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-109

67) उमाशंकर चतुर्वेदी, तोप और तोपचंद, पृ-129, अपने अपने रावण

68) जीवन प्रकाश जोशी, कविता की पहचान, पृ-37

69) यथासंभव, शरद जोशी, पृ-71, 'नया मेघदूत'

70) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-41

71) शंकर पुणताम्बेकर, विजिट यजराज की, पृ-174,

72) वही, पृ-81

73) सुदर्शन मजीठिया, डिस्को कल्चर, पृ-135, 'मेरी नाक..... तेरी नाक'
74) सुदर्शन मजीठिया, पब्लिक सेक्टर का साँड, पृ-52, एक गाय की मौत
75) प्रेम जनमेजय, मैं नहीं माखन खायो, पृ-19, 20, 'जाना सुदामा का कृष्ण से होली खेलने'
76) रोशनलाल सुरीरवाला, ये माँगने वाले, पृ-15
77) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगे, पृ-24, 'आधुनिक मधुसूदन का गीतोपदेश'
78) नरेन्द्र कोहली, 'आधुनिक लड़की की पीड़ा', पृ-15
79) शरद जोशी, यथाशंभव, पृ-256, 257, 'अमरता के एहसास की भयावनी रात'
80) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-251, 252, चन्द्रमा की सच्ची कथा'
81) लतीफ घोंघी, मेरी प्रिय व्यंग्य रचनायें, पृ-129, 'एक चिकित्सा कथा-सतयुग शैली में'
82) नरेन्द्र कोहली, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें, पृ-96, 'कबूतर'
83) संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-33, 34, 'सब्जी कान्फ्रेस'
84) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-32, 'राम तेरी लीला अपरम्पार'
85) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-68, 'नारद की लेटेस्ट धरती यात्रा'
86) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-37
87) जगतसिंह बिष्ट, तिरछी नज़र, पृ-22, 'मंत्री महोदय की यमलोक में छवि'
88) शरद जोशी, यथासंभव
89) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-165
90) संसार चन्द्र, सोने के दाँत, पृ-31, 83
91) लतीफ घोंघी, ज्ञान की दुकान
92) अजातशत्रु, आधी वैतरणी, पृ-15, 42, 62
93) शंकर पुणताम्बेकर, शतरंज के खिलाड़ी, पृ-107, 109, 66
94) श्रवणकुमार उर्मलिया, लक्ष्मीजी मृत्युलोक में, पृ-15, 75, 33
95) गिरीश पंकज, भ्रष्टाचार विकास प्राधिकरण, पृ-9,
96) भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो !, पृ-28

97) अत्मानन्द मिश्र, बे बात की बात, पृ-28, 'बादलों के पार पहली बार'

98) सुदर्शन मजीठिया, छींटे, पृ-74, 75, 'कविवर बांके बिहारीलालजी'

99) रोशनलाल सुरीरवाला, मुर्ख शिरोमणि, पृ-16

100) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-83, 'सरे राह कुढ़ते-कुढ़ते.. ..'

101) के.पी. सक्सेना, मूँछ मूँछ की बात, पृ-39, 'फार एडल्ट्स आनली...'

102) केशवचन्द्र वर्मा, मृग छाप हीरो, पृ-133

103) गोपाल चतुर्वेदी, खंभो के खेल, पृ-46, 47, 'चुनाव वर्ष-कार्यकर्ताओं की तलाश'

104) यथासम्भव, शरद जोशी, पृ-100.

105) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-79

106) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-44

107) शरद् जोशी, यथासम्भव, पृ-129, 'सेवकराम' निर्भय के तीन पत्र'

108) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-321, 'लेखक के नाम पाँच पत्र'

109) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-122, 'विदेश भ्रमण' (एक शरीफ के नाम चार पत्र)

110) लतीफ घोंघी, मेरा मुख्य अतिथि हो जाना, पृ-114, 115, हाय मेरी लतीफा

111) सुदर्शन मजीठिया, दृष्टव्य: "पैसा आखिर किसके बाप का' शीर्षक रचना

112) रोशनलाल सुरीरवाला, ये माँगने वाले, पृ-61

113) बरसानेलाल चतुर्वेदी, टालू मिक्चर, पृ-47, 'भाई भ्रष्टाचार प्रसादजी को प्रेम पत्र'

114) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-148, 'अ-लेखन की नयी विद्या की जनक-गोष्ठी'

115) श्यमसुन्दर घोष,प्रेम करने की उमर, पृ-84, 'आलोचक के नाम व्यंग्यकार का पत्र'

116) नीरज व्यास, भरे पेट का चिन्तन, पृ-35, 'आदरणीय आलाकमानजी'

117) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरव खिले पलाश, पृ-193

118) संसारचन्द्र, सोने के दाँत, पृ-58

119) अमृतराय, विजिट इण्डिया, पृ-9, 89

120) रामनारायण उपाध्याय, बख्शीशनामा, पृ-148, 156
121) श्यमसुन्दर घोष, खिन खारा,खिन मीठा, पृ-104
122) विश्वमोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-182
123) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-143, 'ट', 'ठ', 'ड' अथवा 'ढ' पर भाषण
124) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-110, 111, 'एक दिक्षान्त भाषण'
125) सुदर्शन मजीठिया, अस्मिता का चंदन, पृ-69
126) श्याम सुन्दर घोष, प्रेम करने की उमर, पृ-77, 'ऐसे थे के. बी.
127) संसारचन्द्र, महामुर्ख मण्डल, पृ-96
128) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-229, 230, 'मेघदूत की पुस्तक-समीक्षा'
129) रवीन्द्रनाथ त्यागी, पूरब खिले पलाश, पृ-198, 199, 'कवि कालिदास का जन्मस्थान'
130) सुदर्शन मजीठिया, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनायें, पृ-25, 'शोर प्रधान संस्कृति'
131) रोशनलाल सुरीरवाला, डॉ. एम. ए., पी. एच. डी., पृ-163, 164
132) नरेन्द्र कोहली, मेरी व्यंग्य रचनायें, पृ-77, साहित्य के मुजाविर
133) शंकर पुणताम्बेकर, पतनजली, पृ-25, 'इन्टरव्यू: मेरा मेरे ही द्वारा'
134) बरसानेलाल चतुर्वेदी, 'द' से दलाल, पृ-55, 'उल्लूजी और प्रतिभूति घोटाला'
135) सूर्यबाला, अजगर करे न चाकरी, पृ-76, 'एक अभूतपूर्व डिमांसट्रेशन: खाना ईट का'
136) मधुसूदन पाटिल, देखन में छोटे लगे, पृ-29, 'मुर्खिस्तान की सैर'
137) शेरजंग गर्ग, दौरा अन्तर्यामी का, पृ-69, 'जिस पथ पर जायें वीर अनेक'
138) विश्वमोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-14, 'एक मुलाकात हवाई अड्डे पर'
139) श्रीलाल शुक्ल, यहाँ से वहाँ, पृ-22, 'एक हारे हुए नेता का इन्टरव्यू'
140) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-33, 'बसस्टैंन्ड का भिखारी'
141) शंकर पुणताम्बेकर, बदनामचा, पृ-46, 'कोम्युटर को पत्र'
142) सुदर्शन मजीठिया, पब्लिक सैक्टर का साँड, पृ-82,
143) वही, पृ-85
144) रोशनलाल सुरीरवाला, पत्नी शरणम् गच्छामी, पृ-122, 'थर्ड क्लास कम्पार्टमेन्ट'

145) वही, पृ-60

146) श्याम सुन्दर घोष, खिन खारा, खिन मीठा, पृ-61, 'नेता का दामाद'

147) हरि जोशी, भेड़ की नियति, पृ-118, 119, 'टेबिल टेनिस की बोल और कार्यालय की फाइल'

148) विश्वमोहन माथुर, क्षमा याचना सहित, पृ-65, 'इस मौसम पर निबंध'

149) शरद जोशी, यथासंभव, पृ-440, 'कवि, अफसर और चिड़िया'

150) सुदर्शन मजीठिया, छींटे, पृ-60

151) वही, आवारा गाय, पृ-121

152) रोशनलाल सुरीरवाला, पत्नी शरणं गच्छामि, पृ-21

153) मधुसूदन पाटिल, अथ व्यंग्यम्, पृ-63

154) हरिशंकर परसाई, 'निठल्ले की डायरी, पृ-145, 'भेड़े और भेड़ियों'

155) रोशनलाल सुरीरवाला, भिश्ती और भस्मासुर, पृ-34

156) बरसानेलाल चतुर्वेदी, चौबेजी की डायरी, पृ-122

157) भरतराम भट्ट, अवसरवादी बनो, पृ-51, 'अकबर ने महाभारत लिखवाया'